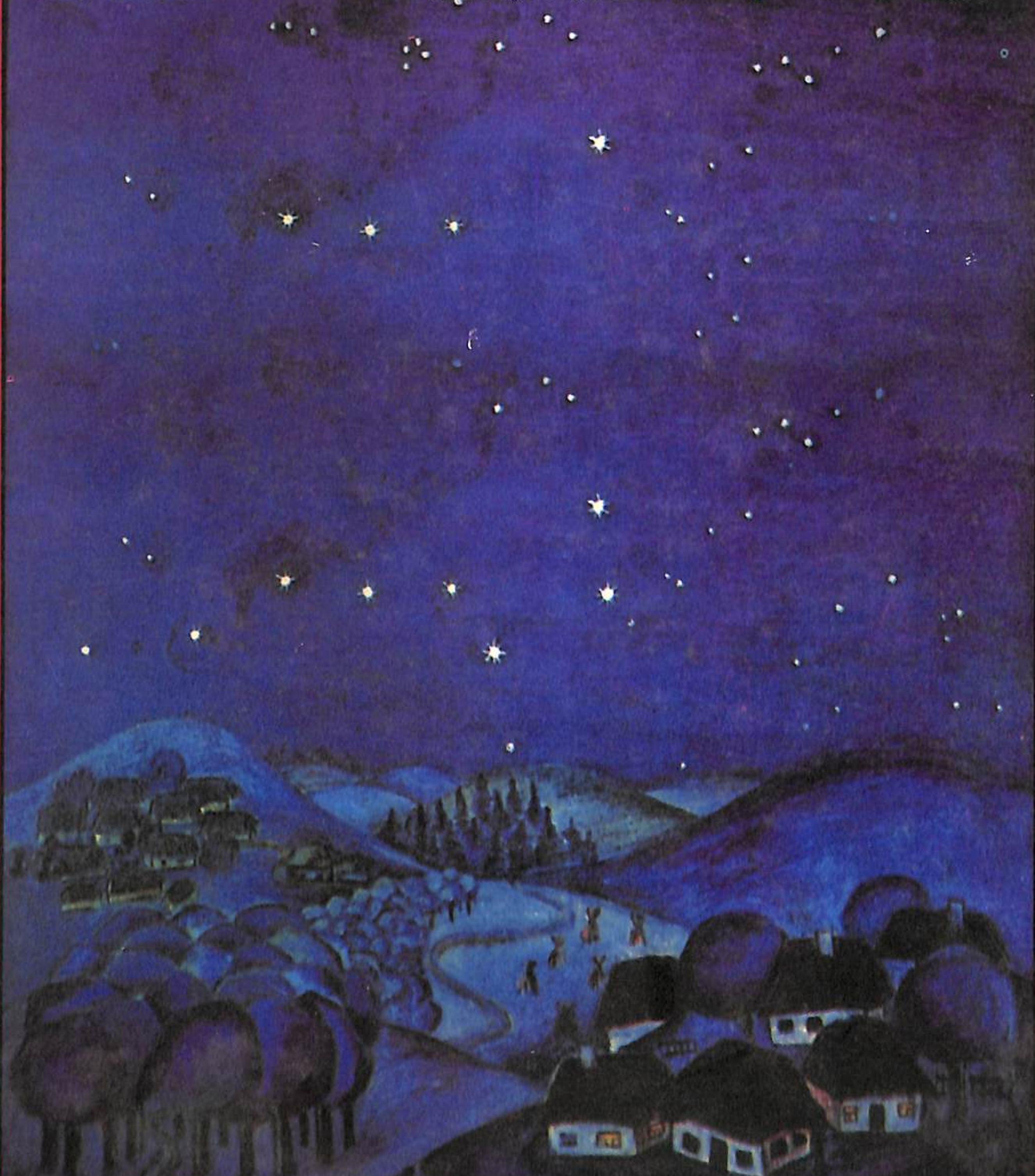
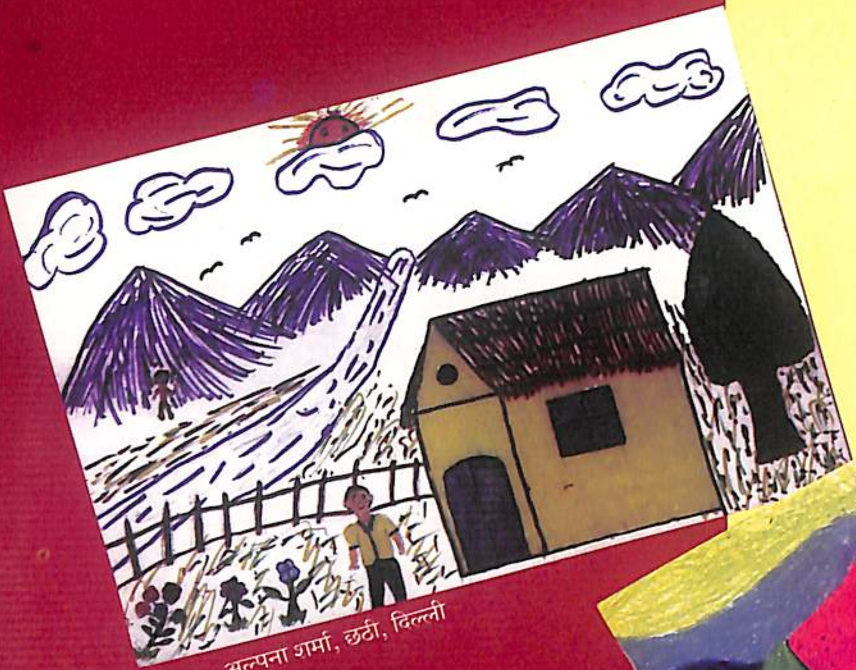
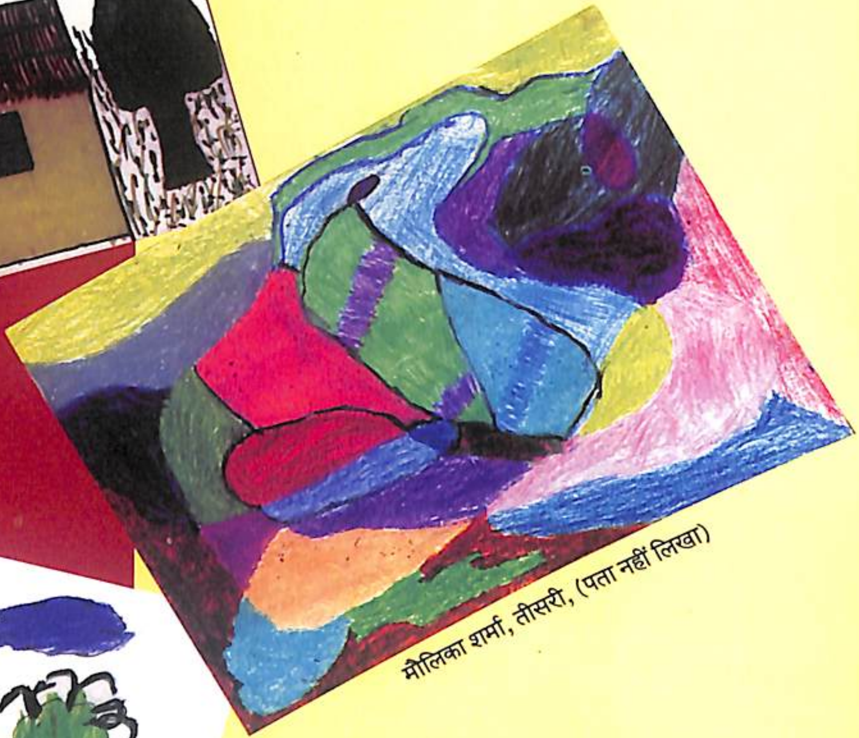
चकमक

सितम्बर 2006 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 10.00

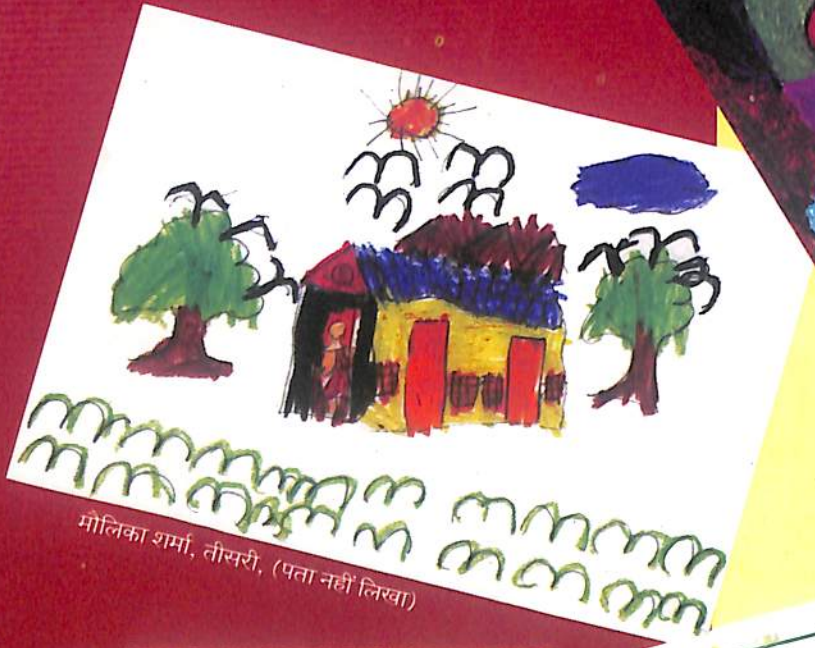




अल्पना शर्मा, छठी, दिल्ली



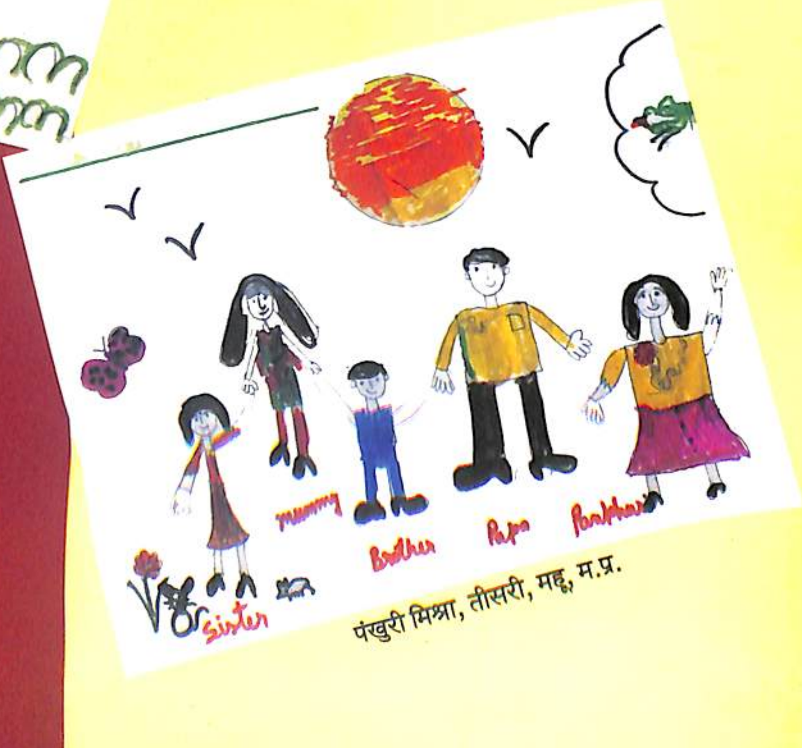
मौलिका शर्मा, तीसरी, (पता नहीं लिखा)



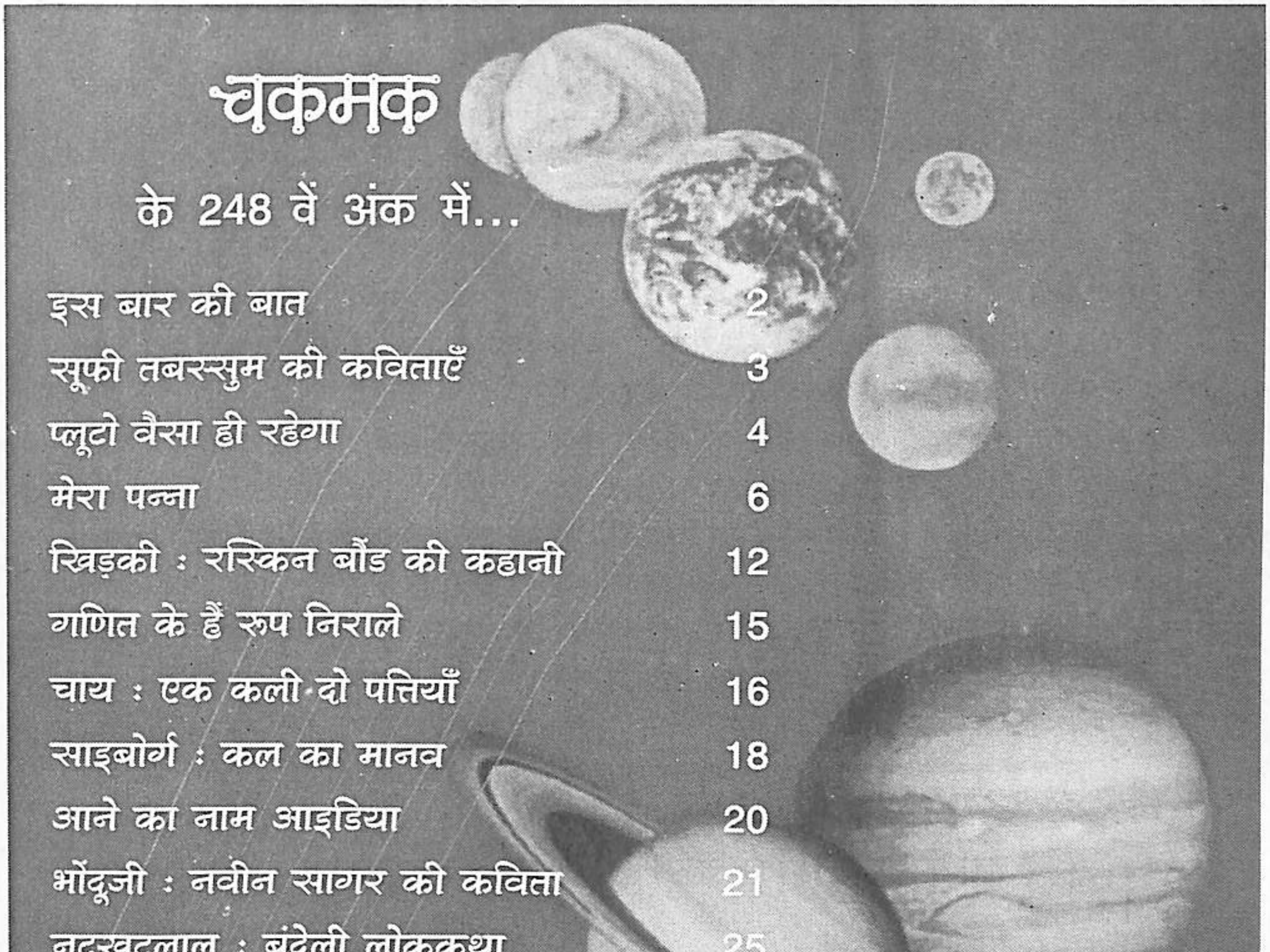
मौलिका शर्मा, तीसरी, (पता नहीं लिखा)



दीप ज्योति, आठवीं, दिल्ली



पंखुरी मिश्रा, तीसरी, महू, म.प्र.



चकमक

के 248 वें अंक में...

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा और जनविज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात

दोस्तो,

चकमक का सितम्बर अंक पेश है। इस बार तुम्हें कई लज़ीज चीज़ें इस अंक में मिलेंगी। एक चीज़ जो तुम्हें शायद सबसे ज्यादा लुभाएगी वह है तुम्हारे हमउम्र बच्चों द्वारा अंग्रेज़ी से अनुवाद की गई दो कहानियाँ। ये बच्चे बंगलौर के मशहूर ऋषिवैली स्कूल में सातवीं कक्षा में पढ़ते हैं। इस काम के लिए उन्हें उकसाने और सहेजने में उनकी टीचर सुश्री सहजो सिंह की बड़ी भूमिका रही। इन कहानियों के मूल लेखक रस्किन बौंड हैं। हम ऋषिवैली के बच्चों, सहजोजी और रस्किन बौंड जी का शुक्रिया अदा करते हैं। इस त्रिमूर्ति की मदद के बिना ये कहानियाँ हम तुम सबको कहाँ पढ़वा पाते।

नवीन सागर की चुलबुली कविता भोंदूजी और सूफी तबस्सुम की छोटी-छोटी कविताएँ, जो असल में फुलझड़ियाँ हैं, तुम्हारी जबान पर चढ़कर रहेंगी।

पिछले महीने का स्टार रहा प्लूटो। हर जगह बस उसी की चर्चा होती रही। अब प्लूटो ग्रहों में नहीं गिना जाएगा। किस आधार पर प्लूटो को ग्रह मण्डली से बाहर कर दिया गया, हम बस इसी पर विचार करेंगे। इसके अलावा दिल के धड़कने और चाय के इतिहास पर लेख हैं। 'बीते ज़माने की' घुमक्कड़ लोग की कहानी तो आगे बढ़ेगी ही और साइबोर्ग में 'आने वाले कल' की कहानी भी पढ़ना। करने-धरने की चीज़ों के अलावा हमारे कुछ दोस्तों को इस बार चित्र उकेरने का मौका भी मिलेगा। इसके अलावा नियमित कालम हैं ही।

छपाई से जुड़ी लगभग सभी चीज़ों में पिछले एकाध साल में बड़ी तेज़ी आई है। बहुत कोशिशों के बावजूद हम चकमक का दाम यथावत नहीं रख पा रहे हैं। तुम्हें शायद याद होगा कि जुलाई में हमने चकमक के दाम बढ़ाने की बात कही थी। लेकिन फिर इसे स्थगित कर दिया था। अब दाम बढ़ाने के निर्णय को और टाला नहीं जा पा रहा है।

हमें पक्का विश्वास है तुम हमें सहयोग करोगे। इस वादे के साथ कि चकमक के जरिए तुम तक मज़ेदार सामग्री पहुँचाने का यह सफर चलता रहेगा...

तुम्हारा
सुशील

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष 22, अंक-3 सितम्बर 2006

सम्पादन
अंजलि नरोना
सुशील शुक्ल
विनोद रायना

सम्पादन परामर्श
राजेश उत्साही

डिज़ायन
विप्लव शशि

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

साज-सज्जा
राकेश खत्री

वितरण
अनिल लोखण्डे
कमल सिंह

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-7/एचआईजी-453,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)

फोन - 246 3380
eklavyamp@mantrafreenet.com

चंदे की नई दरें

एक प्रति	:	15.00 रुपए
वार्षिक	:	150.00 रुपए
दो साल	:	275.00 रुपए
तीन साल	:	350.00 रुपए
आजीवन	:	1500.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

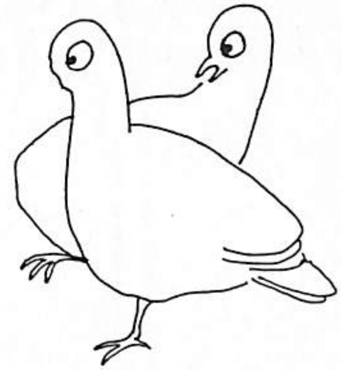
चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चैक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चैक में बैंक चार्ज 80.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

सूफी तबस्सुम की चार कविताएँ



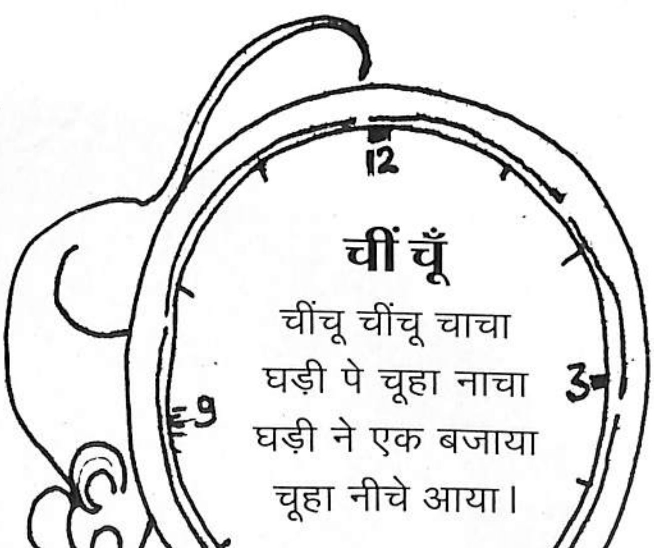
निराला शहर

एक निराला शहर
शहर के अन्दर नहर
नहर के बीच में आग
आग में काला नाग
नाग के ऊपर पेड़
पेड़ के नीचे भेड़
भेड़ के सर पर मोर
मोर मचाए शोर



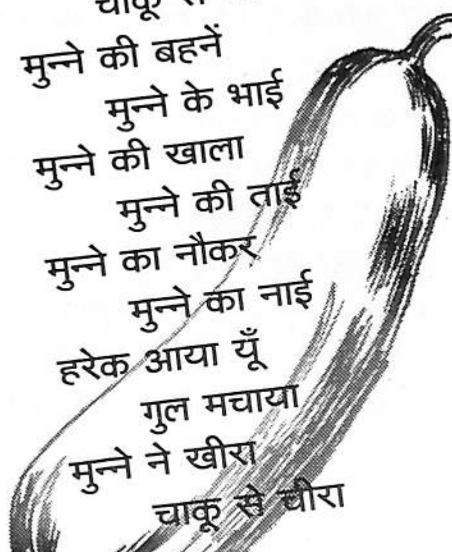
दोनों शेर

एक था तीतर, एक बटेर
लड़ने में थे दोनों शेर
लड़ते-लड़ते हो गई गुम
एक की चोंच और
एक की दुम



चीं चूँ

चींचू चींचू चाचा
घड़ी पे चूहा नाचा
घड़ी ने एक बजाया
चूहा नीचे आया।



खीरा

मुन्ने ने खीरा
चाकू से चीरा
मुन्ने की बहनें
मुन्ने के भाई
मुन्ने की खाला
मुन्ने की ताई
मुन्ने का नौकर
मुन्ने का नाई
हरेक आया यूँ
गुल मचाया
मुन्ने ने खीरा
चाकू से चीरा

ग्रह कहें या न कहें प्लूटो वैसा ही रहेगा!

• डॉ. सुशील जोशी

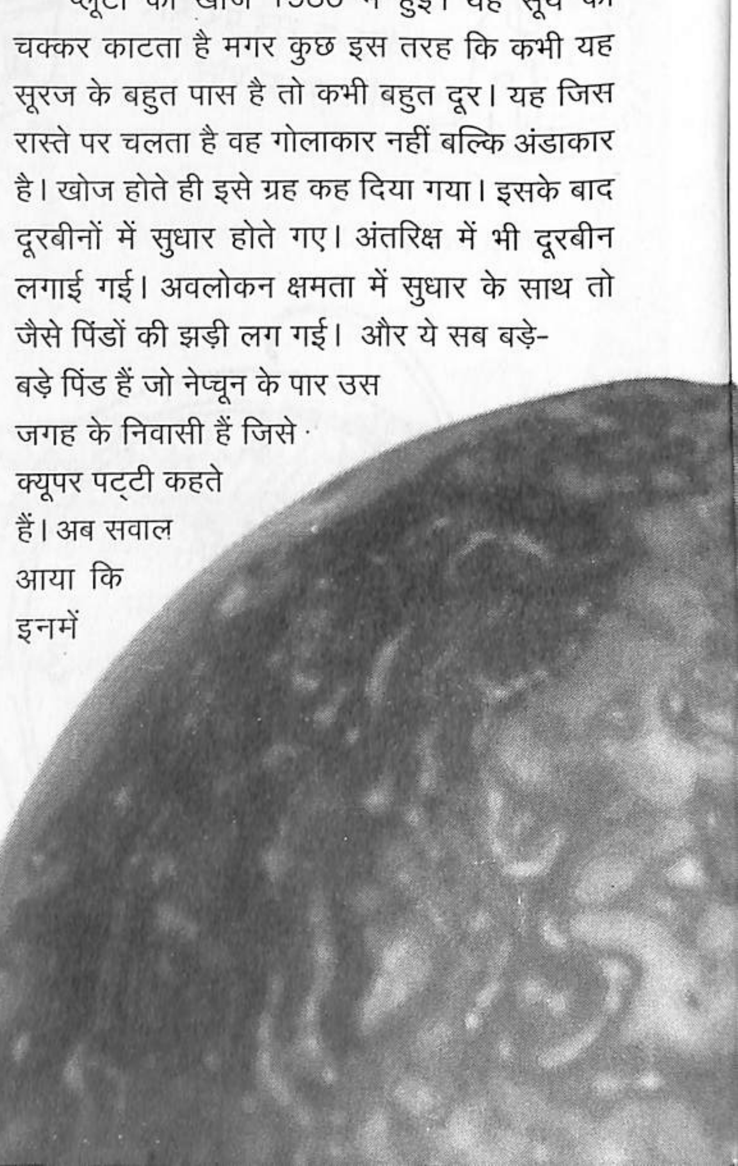
अब ग्रहों की संख्या आठ रह गई है। 26 अगस्त तक हमारे सौर मंडल में 9 ग्रह थे। तो सवाल है कि ऐसा कैसे हो गया। क्या पहले गिनने में गलती हो गई थी? या ग्रह कहलाने वाला कोई गोला आकाश से गायब हो गया है? इन सवालों के जबाव जानने के लिए थोड़ा-सा इतिहास (हाँ, वही बेवफा इतिहास) देखना होगा।

सबसे पहले तो यह बताना ज़रूरी है कि सौर मंडल में हज़ारों पिंड घूम रहे हैं। इन्हें ग्रह कहें, क्षुद्र ग्रह कहें, बौना ग्रह कहें, प्लूटोन कहें, या कुछ और कहें, यह हमारी समझ की बात है। इससे उन पिंडों को कोई फर्क नहीं पड़ता। दूसरी बात यह है कि ये पिंड लाखों वर्षों से मौजूद हैं। बदलाव आया है तो हमारी 'देखने' की क्षमता में।

प्राचीन काल में लोगों ने देखा था कि आकाश में सब कुछ स्थिर नहीं है। सूरज और चाँद तो चलते दिखते ही थे, तारे भी स्थिर नहीं रहते थे। मगर तारों की चादर के सामने कुछ चमकदार गोले अलग से चलते दिखते थे, इन्हें ही ग्रह कहा गया। उस समय इन्सानों के पास 'देखने' की क्षमता अपनी आँखों तक सीमित थी। पाँच ग्रह पहचाने गए थे - बुध, बृहस्पति, शुक्र, मंगल और शनि। भारत में इनके अलावा सूर्य, चंद्रमा और राहू व केतु को भी ग्रह माना गया था। फिर जब यह समझ में आया कि पृथ्वी सौर मंडल के केंद्र में नहीं है, तो ग्रह छह हो गए; पृथ्वी भी तो एक ग्रह है। यह भी स्पष्ट हो गया कि कुछ पिंड सूर्य का नहीं बल्कि किसी अन्य ग्रह का चक्कर लगाते हैं, इन्हें उपग्रह कहा गया।

फिर इन्सान ने दूरबीन बनाई। नए-नए पिंडों की खोज होने लगी। सबसे पहले यूरेनस की खोज हुई। लेकिन यूरेनस को लेकर एक सवाल खड़ा हो गया। यूरेनस अपनी कक्षा में एक समान गति से नहीं घूम रहा था जैसी कि खगोलशास्त्रियों ने गणना की थी। उनकी गणना का आधार न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण के नियम थे। खगोलशास्त्रियों ने कहा कि इसका अर्थ है यूरेनस के आसपास कोई और ग्रह भी है जो उसकी गति को प्रभावित कर रहा है। उनका अनुमान सच साबित हुआ, जब 1845 में नेप्चून को खोज निकाला गया। यह न्यूटन के नियम की अच्छी परख थी और वह सही साबित हुआ था।

प्लूटो की खोज 1930 में हुई। यह सूर्य का चक्कर काटता है मगर कुछ इस तरह कि कभी यह सूरज के बहुत पास है तो कभी बहुत दूर। यह जिस रास्ते पर चलता है वह गोलाकार नहीं बल्कि अंडाकार है। खोज होते ही इसे ग्रह कह दिया गया। इसके बाद दूरबीनों में सुधार होते गए। अंतरिक्ष में भी दूरबीन लगाई गई। अवलोकन क्षमता में सुधार के साथ तो जैसे पिंडों की झड़ी लग गई। और ये सब बड़े-बड़े पिंड हैं जो नेप्चून के पार उस जगह के निवासी हैं जिसे क्यूपर पट्टी कहते हैं। अब सवाल आया कि इनमें

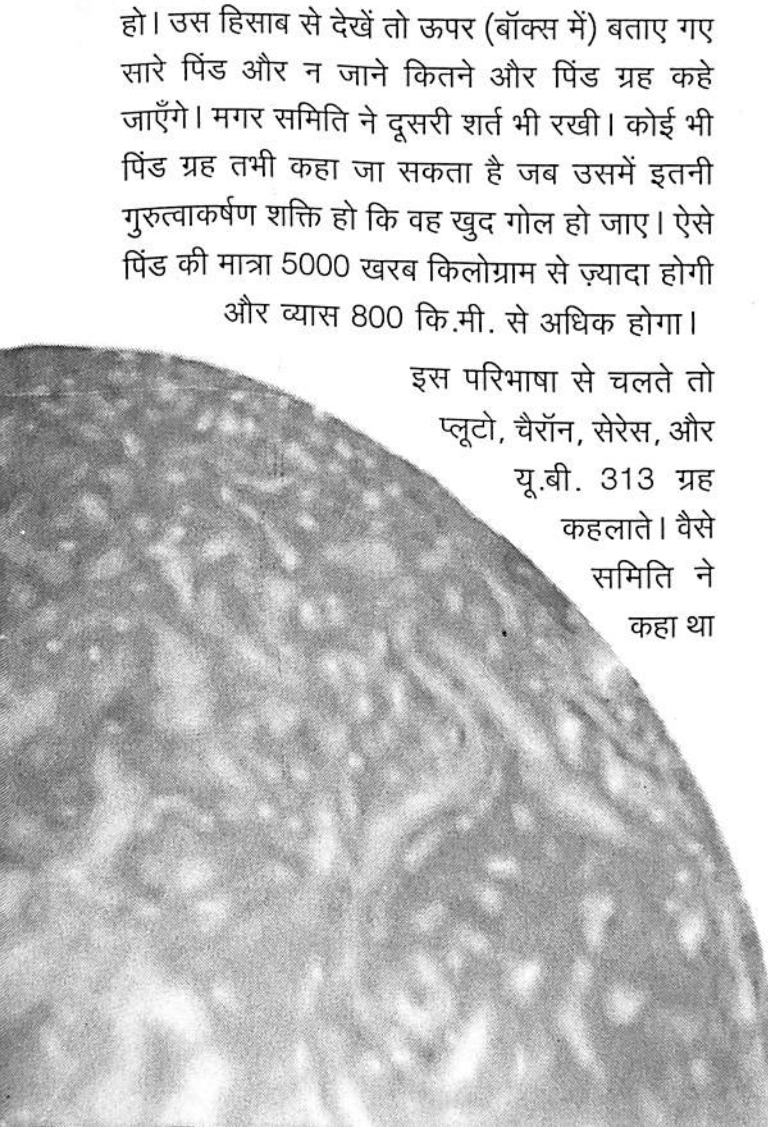


से किसे ग्रह कहें, किसे नहीं। ये सारे और इनके अलावा न जाने कितने पिंड सौर मंडल में भटक रहे हैं। तो आकाश का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिकों यानी खगोलशास्त्रियों ने सोचा कि इसके लिए कोई तरीका निकालना चाहिए। यह तरीका निकालने के लिए एक समिति बनाई गई।

इस समिति को ग्रह की परिभाषा तय करने का काम सौंपा गया। समिति के सामने एक तरीका तो यह था कि परंपरा के अनुसार जिसे ग्रह माना गया उसी को ग्रह स्वीकार कर ले। यानी इतिहास को महत्व दें। दूसरा तरीका था कि आकाश में घूमते पिंडों के भौतिक गुणों पर ध्यान दे। समिति ने भौतिक गुणों वाला रास्ता चुना।

सबसे पहले तो समिति ने कहा कि ग्रह उस पिंड को कहेंगे जो सूर्य का चक्कर काटता हो, मगर खुद सूर्य न हो और किसी अन्य ग्रह का चक्कर न काटता हो। उस हिसाब से देखें तो ऊपर (बॉक्स में) बताए गए सारे पिंड और न जाने कितने और पिंड ग्रह कहे जाएँगे। मगर समिति ने दूसरी शर्त भी रखी। कोई भी पिंड ग्रह तभी कहा जा सकता है जब उसमें इतनी गुरुत्वाकर्षण शक्ति हो कि वह खुद गोल हो जाए। ऐसे पिंड की मात्रा 5000 खरब किलोग्राम से ज़्यादा होगी और व्यास 800 कि.मी. से अधिक होगा।

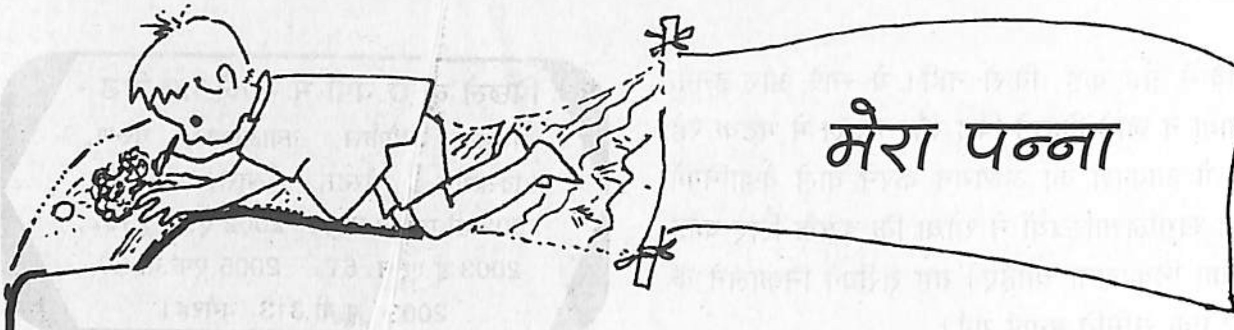
इस परिभाषा से चलते तो प्लूटो, चैरॉन, सेरेस, और यू.बी. 313 ग्रह कहलाते। वैसे समिति ने कहा था



पिछले कुछ वर्षों में खोजे गए पिंड -
सेड्ना, ओर्कस, क्वाओआर, वरुण, इक्सियॉन, वेस्टा, पेलास, हायजिया, 2002 टी.एक्स.300, 2002 ए.डब्लू.197, 2003 ई.एल. 61, 2005 एफ.वाय.9, 2003 यू.बी.313 वगैरह।

कि सेरेस को छोड़कर शेष को पूर्ण ग्रह नहीं कहा जा सकता। इसलिए इनके लिए एक नया नाम प्लूटोन चुना गया। यदि यह परिभाषा मान लेते तो बाद में नए-नए ग्रह जुड़ते जाते। ज़रा सोचो, तुम्हें इन सबके नाम याद करने पड़ते। मगर जब यह परिभाषा खगोल शास्त्रियों की बड़ी बैठक के सामने रखी गई तो उन्होंने एक और शर्त जोड़ दी। उन्होंने कहा कि कोई भी ऐसा गोल पिंड ग्रह तभी कहलाएगा जब वह अपने आसपास का भाग साफ कर दे। मतलब उसके पड़ोस में उसकी टक्कर का कोई और पिंड नहीं होना चाहिए। जब यह तीसरी शर्त जुड़ी तो प्लूटो, चैरॉन, सेरेस, यू.बी.313 वगैरह मुँह ताकते रह गए। ये सबके सब ऐसी जगहों पर हैं जहाँ इनके पड़ोस में लगभग इनके बराबर के पिंड मौजूद हैं। इसी नई परिभाषा के मुताबिक प्लूटो को ग्रह का दर्ज़ा खोना पड़ा है। क्योंकि उसका परिक्रमा पथ नेप्चून के परिक्रमा पथ को काटता है। यानी उसकी कक्षा साफ नहीं है। इस तरह ग्रह रह गए आठ। और प्लूटो, सेरेस तथा यू.बी. 313 को नाम मिला बौने ग्रह का। चैरॉन वैसे ही छूट गया, यह शायद प्लूटो का चाँद कहलाएगा।

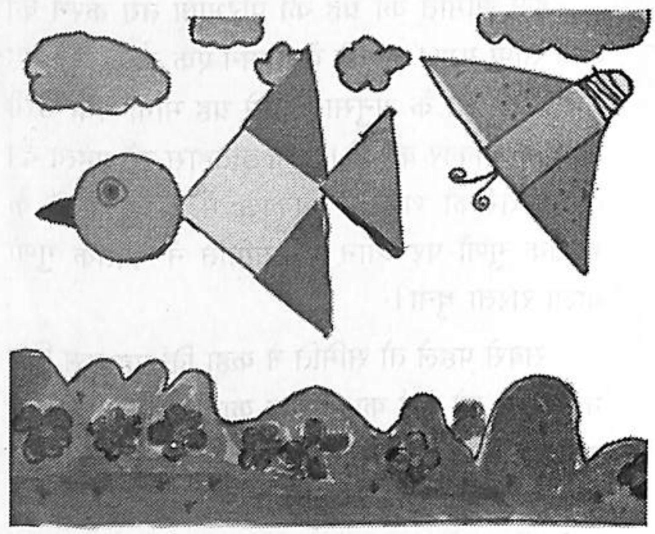
नाम कुछ भी रखे जाएँ, इन पिंडों को क्या फर्क पड़ता है? आखिर ये उसी रास्ते पर चलते रहेंगे, इनकी गुरुत्व शक्ति में कोई फर्क नहीं आएगा। ग्रह और बौने ग्रह के निर्णय से सिर्फ हमारी अवलोकन और समूहीकरण की क्षमता का आभास मिलता है। वैसे कई खगोल शास्त्री इस निर्णय से नाखुश हैं। उन्होंने इसके खिलाफ अभियान भी छेड़ दिया है। तो अभी आकाश में नहीं मगर धरती पर और आतिशबाज़ी की उम्मीद है। ●



मैं सिनेमा देखना गया

एक बार मैं अपने घर से पाँच रुपये लेकर अपने दोस्त के साथ सिनेमा गया। सिनेमा घर से बहुत दूर था। हमें पिक्चर देखते-देखते शाम हो गई। तो मैं अपने दोस्त के घर रह गया। फिर जब मैं सुबह घर आया तो मेरे एक दोस्त ने कहा कि तेरे पापा बहुत परेशान हैं। उसकी यह बात सुनकर मैं घबरा गया। जब मैं घर आया तो पापा ने कहा कि- बेटा बोलकर जाना चाहिए।

● *बन्टी परिहार, चौथी, उज्जैन, म.प्र.*



● *पंखुरी मिश्रा, तीसरी, महु, म.प्र.*

जब मैं रूठी थी

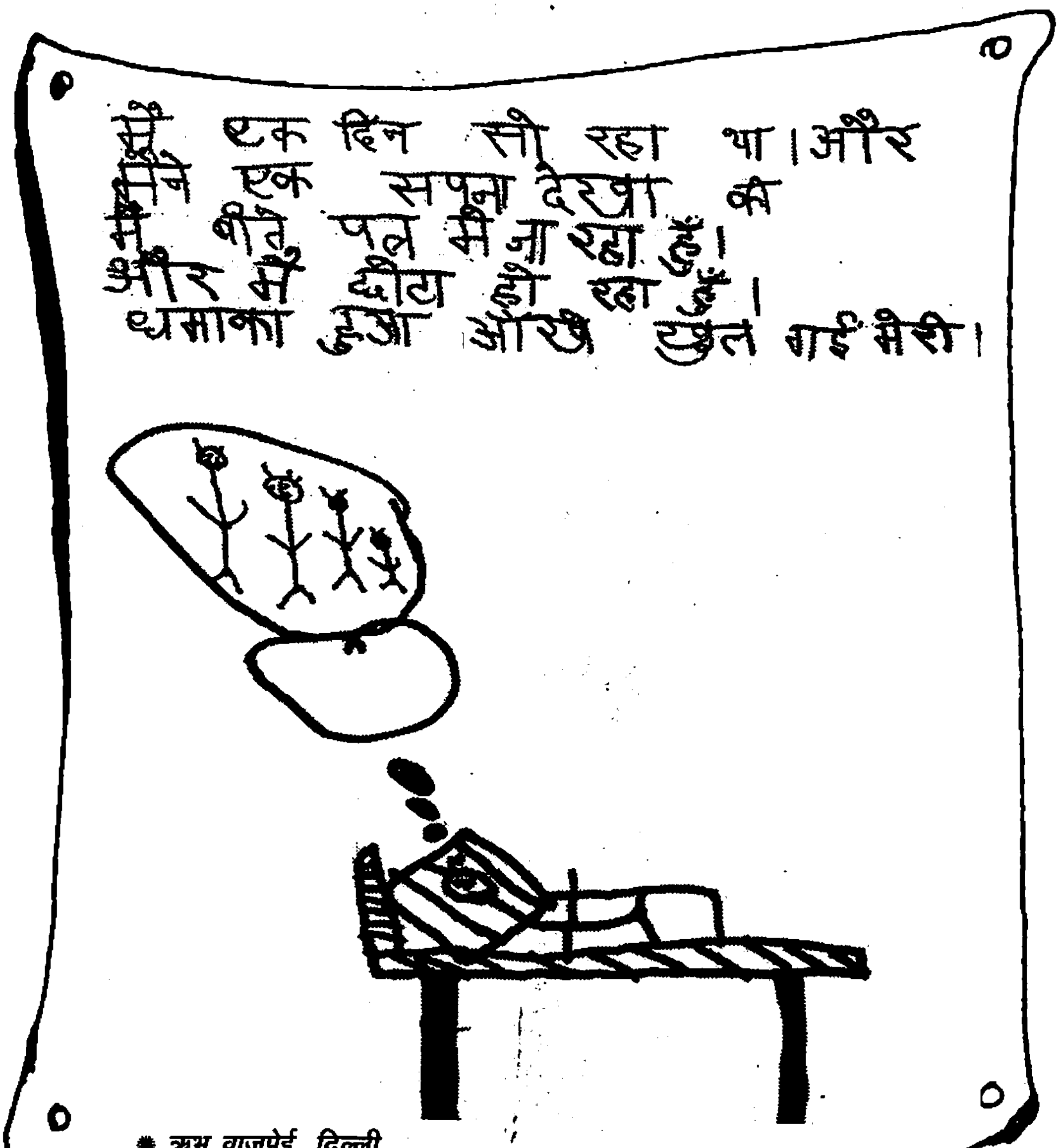
एक बार मैं अपने मम्मी-पापा से नाराज़ थी। मेरे कमरे में बहुत सारे गद्दे और रज़ाइयाँ रखी हुई थीं। मैं मम्मी-पापा से गुस्सा होकर गद्दे व रज़ाइयों के बीच में घुसकर छुप गई। तभी वहाँ मेरे बड़े भाई-बहन मुझे ढूँढ़ते-ढूँढ़ते आए। फिर वे लोग थककर रज़ाइयों पर बैठ गए। तभी मैं चिल्ला उठी। उनमें से भी कुछ चिल्ला दिए। उन्होंने गद्दे उठाए तो मैं दिखी। उन्होंने कहा कि हम तुम्हें पूरे घर में ढूँढ़ रहे हैं और तुम गद्दे रज़ाइयों में छुपी बैठी हो। सब मुझ पर खूब हँसे। मुझे थोड़ा दर्द भी हुआ। इस घटना पर मैं आज तक हँसती हूँ।

● *सौम्या सक्सेना, छठी, भोपाल, म.प्र.*

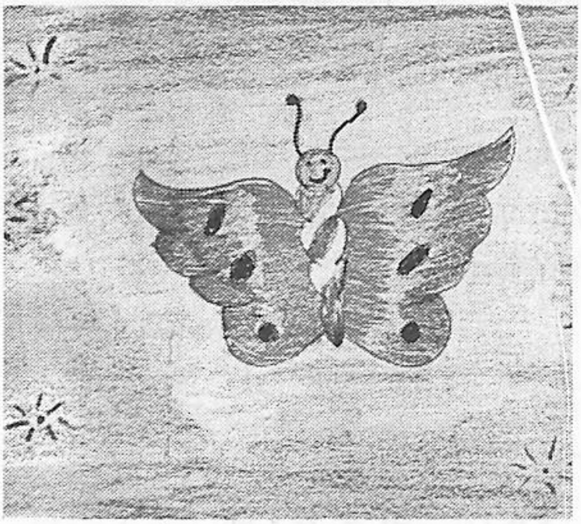
जोकर ने हाथ मिलाया

मेरी दीदी, उज्जैन सिंहस्थ में मेरे घर पर आई हुई थी। उनका एक लड़का और दो लड़की थीं। रात के ग्यारह बजे हम उज्जैन घूमने गए। रात दो बजे हम पंडाल में खाना खाने गए और पेट भर कर खा लिया। हम पंडाल से बाहर निकले और मेरी दीदी का लड़का आईसक्रीम लेने गया और तभी उससे एक जोकर ने हाथ मिलाया और वह डरकर रोने लगा और उसके आसपास खड़े लोग हँसने लगे।

✹ राहुल राय, छठी, उज्जैन, म.प्र.



✹ ऋभु वाजपेई, दिल्ली



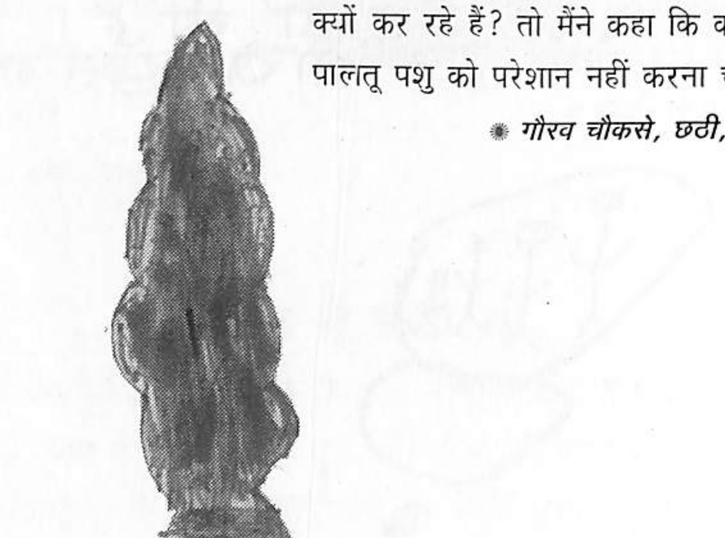
(नाम पता नहीं लिखा)

मेरा नया दोस्त

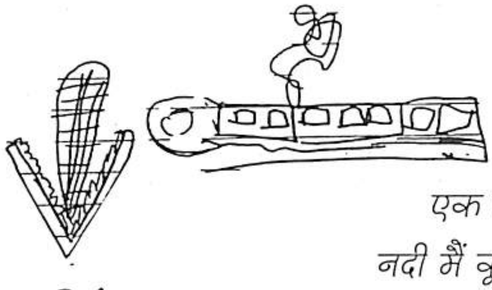
मेरा कल एक नया दोस्त बना है। कल सुबह मैं जब घर से दो मिनट के लिए निकला। तो मैंने देखा कि एक कुत्ता मेरे घर के सामने भौंक रहा था। मैं उसके पास गया तो और तेजी से भौंकने लगा। मैं अन्दर गया और दो ब्रेड ले आया। फिर मैं उसे वो ब्रेड दिखाकर उसके पास गया और फिर मैंने उसे वो ब्रेड खिलाए। वह खुश हो गया और मुझसे हाथ भी मिलाया। फिर वो शांत हो गया और लौट गया।

फिर आज सुबह भी आया था। मगर आज वह भौंक नहीं रहा था। और तो और आज वह हँस रहा था। तो मेरा भाई उसके मजे लेने लगा। मैंने उससे मना किया फिर वह पूछने लगा। भइया आप मना क्यों कर रहे हैं? तो मैंने कहा कि कभी किसी भी पालतू पशु को परेशान नहीं करना चाहिए।

गौरव चौकसे, छठी, भोपाल, म.प्र.



भारत दावी, मोती नगर, उज्जैन, म.प्र.



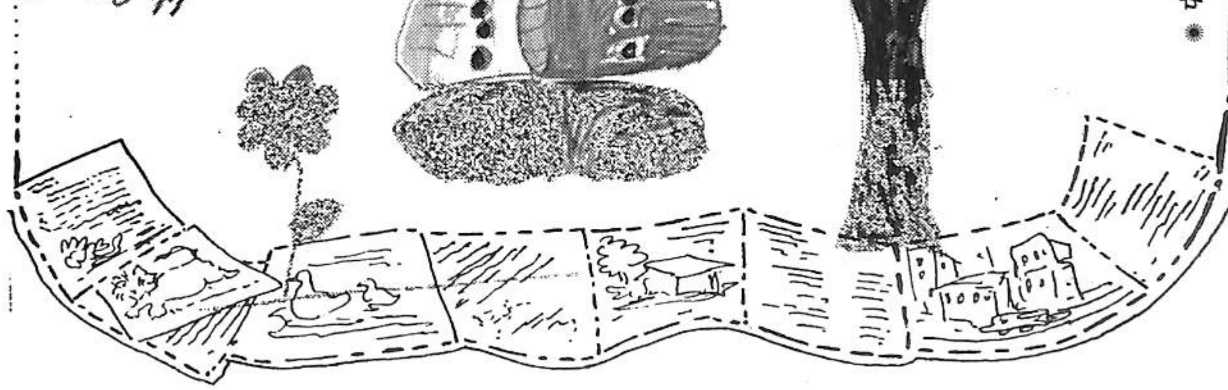


आरती, तीसरी, हराले, औरंगाबाद

सच्ची - मुच्ची

एक बार मैं नदी पर नहाने लगा। मैं बिना सोचे-समझे नदी मैं कूद गया। मैं जिस जगह कूदा वहाँ पर बहुत गहरा था। मुझे तैरना नहीं आता था। इस कारण मैं नदी में डूबने लगा। मैंने चिल्लाने की बहुत कोशिश की किन्तु मैं चिल्ला नहीं पाया। मेरी मौसी की लड़की ने मुझे बचाने के लिए कई प्रयत्न किए, किन्तु असफल रही। वहाँ पर एक आदमी नहा रहा था। मेरी दीदी ने उसे मुझे बचाने के लिए कहा, किन्तु उस आदमी ने मेरी दीदी की एक न सुनी। मेरी दीदी बहुत देर तक चिल्लाती रही। तब एक विचित्र बात हुई। वह आदमी मुझे बचाने के लिए आया। किन्तु वह तैर नहीं रहा था। मुझे ऐसा लगा जैसे वो पानी पर चल रहा हो। उस आदमी ने मुझे वहाँ से निकाल कर किनारे पर लाकर छोड़ दिया। फिर मेरी दीदी ने मुझे बाहर निकाला फिर मैं घर आया। वह दिन मुझे आज तक याद है।

अर्जुन सिंह डाबी, मोती नगर, उज्जैन, म.प्र.



पी. पानी, उज्जैन, म.प्र.

एक मुलाकात बरनी बेचने वाले खानाबदोश काफिले की लड़की जाइमन से

हमारे घर के सामने कुछ दिन पहले खाली मैदान में आंध्र से आये लोगों ने अपना डेरा जमाया था उनमें एक लड़की भी थी जो हमारे यहाँ पानी, रोटी, माँगने आती थी वह पाँच दिन पूर्व हमारे यहाँ रोटी माँगने आई।

मैंने उससे पूछा, "तुम लोग कुछ काम नहीं करती हो?"

उसने कहा, "हम लोग बरनी बेचते हैं हम लोग अभी नए-नए आए हैं इसलिए हमारी बरनी अभी बिकी नहीं हैं। मैंने कल सुबह से खाना नहीं खाया जब कमाएँगे नहीं तो खाएँगे क्या?"

मैंने पूछा, "तुम्हारे माँ-बाप हैं?"

उसने कहा, "माँ को पुलिस वालों ने इतना मारा कि वो मर ही गई, बाप है।"

मैंने पूछा, "तुम्हारी उमर कितनी है?"

उसने कहा, "मुझे मालूम नहीं।"

मैंने पूछा, "तुम्हारे घर में और कौन-कौन हैं?"

उसने कहा, "एक भाई दो बहिन।"

मैंने पूछा, "क्या सभी बरनी बेचते हैं?"

उसने कहा, "नहीं, भाई को तो साँप ने काटा है। तो लँगड़ा लूला है वह बरनी नहीं बेचता, बाकी सब बेचते हैं।"

मैंने पूछा, "पिपरिया आने से पहले तुम कहाँ थीं?"

उसने कहा, "भोपाल के बाद, इटारसी।"

मैंने पूछा, "तुम रेलगाड़ी से आई हो?"

उसने कहा, "नहीं बैलगाड़ी से।"

मैंने पूछा, "कोई तुम्हारे साथ अत्याचार नहीं करता?"

उसने कहा, "हम लोग बरनी बेचते हैं। इसके बाद भी हम लोगों को खाने को नहीं मिलता। हमारे यहाँ जो कुछ भी होता है उसे पुलिस वाले ले जाते हैं। हम जिस गाँव में ठहरते हैं वहाँ किसी के यहाँ भी चोरी होती है सबसे पहले पुलिस वाले हमारे तम्बू में आते हैं और बाप, भाई, बहिन और मुझे खूब मारते हैं मुझे तो पुलिस वालों का नाम सुनते ही डर लगने लगता है।"

इतने में उसके बाप ने आवाज़ दी, "अरी जाइमन कहाँ मर गई, चल इते।"

उसने कहा, "अब मैं चली नहीं तो मेरा बाप मुझे मारेगा और रात को खाना नहीं देगा।"

ऐसा कहकर वो चल गई।

भावना कौशिक, नौवी, पिपरिया, म.प्र.

इसे हमने पिपरिया, म.प्र. से कभी प्रकाशित होने वाली एक सायक्लोस्टायल बाल पत्रिका 'बाल चिरैया' के एक अंक से लिया है। अगर तुम भी अपने आसपास के किसी ऐसे व्यक्ति से मुलाकात करो तो चकमक को लिखकर भेजना।



सलोनी विश्नोई, 9 वर्ष, देहरादून, उत्तरांचल

गरजत-बरसत सावन आओ रे!

झूम - झूमकर बरसे बादल
हवा चले पुरवाई
रिमझिम का उत्पात कर रहा
सावन की ऋतु आई!

इंद्रधनुष के सतरंगों को
देख के चारों ओर,
तान खींचते, शोर मचाते
नाचते - भागते मोर!

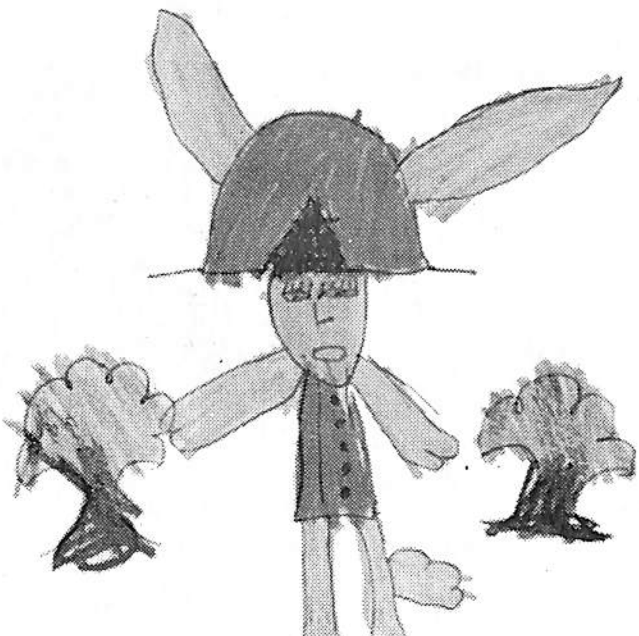
सोनू - मोलू, गुंजन - शबनम
ले कागज की नाव,
उस पर फोकट बोटिंग करते
अपने चींटा राव!

बगिया के बिखरे आँगन को
किसने प्यार से सींचा,
इस अपार जलकुँभ को थामे,
कैसे रूई की रेखा!

सूर्यदेव को कई दिनों से
नहीं है हमने देखा,
घर में होती सायं - सायं
जो बन्द न रखो झरोखा!

किसने यह किया हुआ जो
गर्मी का रंग फीका,
गरजत - बरसत सावन आया
है ये कमाल उसी का!

- वृंदा शर्मा, बारह वर्ष, मुंबई



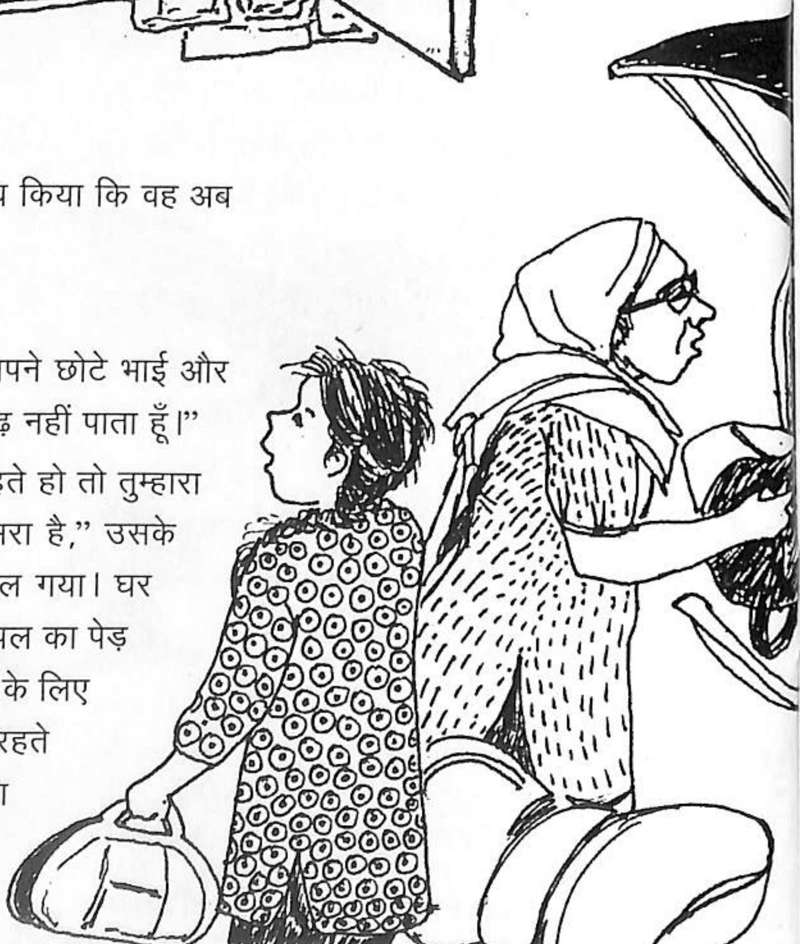


शिवानी प्रकाश लालगे, पाँच वर्ष, सतारा, महाराष्ट्र



खिड़की

● रस्किन बौंड



जब आमिर तेरह साल का था, तो उसने तय किया कि वह अब अपने निज़ी कमरे के काबिल है।

"किसलिए?" उसकी माँ ने पूछा।

"ये बच्चे बहुत शोर मचाते हैं," उसने अपने छोटे भाई और बहन की तरफ इशारा करते हुए कहा, "मैं पढ़ नहीं पाता हूँ।"

"ठीक है अगर तुम सचमुच में पढ़ना चाहते हो तो तुम्हारा अपना कमरा होना चाहिए। छत पर एक कमरा है," उसके दादा ने कहा। आमिर को छत का कमरा मिल गया। घर लम्बा और फैला हुआ था। उसकी दरार में पीपल का पेड़ था। दादा ने कहा था कि दरार को ठीक करने के लिए पैसा नहीं है। उस घर में कई लोग किराए से रहते थे। किराया बहुत कम था, इसलिए बहुत पैसा नहीं आता था। आमिर के पिताजी की दर्ज़ी की दुकान थी। लेकिन वह बहुत ज़्यादा नहीं चलती थी।

उस मकान की छत सपाट थी उस पर सिर्फ एक छोटा कमरा था, जिसे हम बरसाती कहते हैं। आमिर की खिड़की से एक अलग दुनिया दिखाई देती थी। खिड़की के सामने एक बरगद का पेड़ था। वह बरगद का पेड़ उसका था और उसमें रहने वाले सब पशु-पक्षी आमिर की प्रजा थी। उसमें दो गिलहरियाँ, बहुत सारी मैना, एक कौआ और एक चमगादड़ थी।

आमिर बहुत ज़्यादा काम नहीं करता था। वह अपनी किताबें पढ़ता रहता। पर उस साल वह पढ़ना नहीं चाहता था। बाहर देखने से उसे और ज़्यादा जानकारी मिलती थी। पहले वह अकेला था। फिर उसे खिड़की का जादू पता चला। खिड़की से उसकी नज़र दूर तक जाती थी। बरगद के पेड़ और आम के पेड़ों पर से एक बगीचे पर, फिर एक चौड़े रास्ते पर और मकानों के सामने से दौड़ते हुए दूसरे घरों की छतों के ऊपर, रास्तों और खेतों पर। रास्तों पर बहुत कुछ होता था। यहाँ सब्जी बेचने वाले आते-जाते थे और खिलौने और गुब्बारे वाले, जो गुब्बारे धागे से बाँधकर बेचते थे। साईकिल पर बैठकर लड़के इधर-उधर घूमते थे, लड़कियाँ बातें करती थीं। सब उसकी खिड़की के सामने से जाते थे।

गर्मियों के एक दिन, एक टाँगा घर के सामने आकर रुका। टाँगे से एक लड़की और एक बूढ़ी औरत उतरे। एक नौकर ने उनका सामान निकाला। वे घर के अंदर चले गए। अगले दिन लड़की बाग में आई और उसने ऊपर आमिर को देखा। उसके बाल काले थे। उसकी आँखें भी काली थीं, उसके बालों की तरह। वह ग्यारह साल की थी।

"हेलो," आमिर ने कहा। उस लड़की ने आमिर की ओर देखा और पूछा, "तुम कौन हो?"

"मैं भूत हूँ," आमिर ने कहा।



वह हँसी, "तुम भूत की तरह ही दिखते हो।"

आमिर हँसा नहीं, उसने सिर्फ पूछा, "क्यों?"

"तुम ऊपर क्या कर रहे हो?" लड़की ने पूछा।

"मैं जादू कर रहा हूँ।"

वह फिर हँसी, "मैं तुम पर विश्वास नहीं करती हूँ।" उसने कहा।

"तुम अपने आप ऊपर आकर क्यों नहीं देखतीं?" आमिर ने कहा।

लड़की ने ऊपर आकर पूछा, "कहाँ है तुम्हारा जादू?"

"इस खिड़की के सामने आओ और बाहर देखो," आमिर ने कहा। लड़की ने कुछ नहीं कहा, बाहर देखकर सिर्फ हँसी।

वे दोनों दोस्त बन गए। उसका नाम छम्मो था। वह प्रतिदिन आमिर से मिलती थी। उसको भी खिड़की पसंद थी। जब बारिश होती थी तो वे देखते कि औरतें भागकर अपने धुले हुए कपड़े बाहर से उठा लेती थीं और पूरा रस्ता पानी से भर जाता था। बारिश आने पर साइकिल वाले तेज़ी से साइकिल चलाते थे, या फिर किसी आदमी की

छतरी खुल नहीं पाती थी। छोटे बच्चे नंगे घूमते थे। कभी-कभी आमिर छत पर जाकर नाचता और गाता था। जब खिड़की खुली होती थी तब बारिश अंदर आ जाती थी। यह फिल्म जैसा है छम्मो कहती।

जल्दी ही आम भी पक गए। अब छम्मो आम के पेड़ों पर चढ़ी रहती। आमिर पेड़ पर नहीं चढ़ता था। क्योंकि उसको चढ़ना नहीं आता था। वह उसके लिए कच्चे आम लाती थी। आम खाने के बाद दोनों के पेट में दर्द होता था।



"क्यों न हम छत पर बाग बनाएँ?" छम्मो ने कहा।

आमिर ने पूछा, "कैसे?"

"यह बहुत आसान है। हम पत्थर और मिट्टी लाकर फूलों के लिए बिस्तर बनाएँगे फिर हम बीज लगाएँगे। हम सब तरह के फूल लगाएँगे।" छम्मो बोली।

"छत नीचे गिर जाएगी।" आमिर ने कहा।

"कुछ नहीं होगा।" छम्मो ने कहा। फिर वे दो दिन तक सिर्फ बाग बनाते रहे। लेकिन उनके पास सिर्फ एक ही तरह के बीज थे। कद्दू के।

"मैं कद्दू नहीं खा सकता।" आमिर ने कहा।

"क्या तुमने कभी किसी ऐसे आदमी को देखा है जिसे कद्दू पसंद है?" छम्मो ने पूछा।

"नहीं, किसी को भी कद्दू पसंद नहीं है," आमिर ने कहा।

"फिर भी लोग उसे उगाते हैं, बेचते हैं और बच्चों को खिलाते हैं।" छम्मो ने कहा।

"वे लोग हमें सिर्फ परेशान करने के लिए यह सब करते हैं।" आमिर ने कहा, "ठीक है हम कद्दू अपने दुश्मनों को खिलाएँगे।"

इसलिए उन्होंने कद्दू के बीज डाले और अपने काम से खुश हुए। अगली रात बहुत बारिश हुई। सुबह उन्होंने देखा ईंटों के सिवाए सब कुछ बह गया था।

वे खिड़की के सामने खड़े हो गए।

एक मैना झगड़े में पड़ी और उसके सिर के सारे पंख निकल गए। एक बोगनविला की बेल जो दीवार पर चढ़ रही थी, खिड़की से अंदर आ गई। छम्मो ने कहा, "अब हम खिड़की बन्द नहीं कर सकते क्योंकि पौधा बीच में है।"

"अब हम खिड़की को बन्द नहीं करेंगे," आमिर ने कहा। और उन्होंने पौधे को अंदर आने दिया। मौसम बहुत सुन्दर हो गया था। आमिर और छम्मो रोज़ बाहर देखा करते थे।

"मैं कल जा रही हूँ", छम्मो ने एक दिन कहा। आमिर को बहुत आश्चर्य हुआ और वह कुछ कह नहीं पाया।

"मैं अगले साल आऊँगी। तुम यहीं रहोगे ना?" छम्मो ने पूछा। "हाँ, ऐसा ही लगता है," आमिर ने कहा। अगले दिन घर के सामने एक टाँगा आया जिसमें एक बूढ़ी औरत, छम्मो और उनका नौकर चले गए। आमिर अपनी खिड़की पर खड़ा था। छम्मो ने आमिर की तरफ हाथ हिलाया। टाँगा चलता गया और छम्मो अपना हाथ हिलाती रही। आमिर ने बोगनविला की बेल को बाहर निकाल दिया और खिड़की को बन्द कर दिया। उसने तय किया कि यह खिड़की वह तभी खोलेगा जब छम्मो वापिस आएगी। ●

गणित के हैं रूप निराले

छुटपन में माँ कहती थी - गणित मन लगाकर पढ़ना। बड़े काम की चीज़ है। झट हिसाब लग जाता है। हमने भी माना गणित बड़े काम की चीज़ है। पर कुछ और सोचा तो पाया कि बड़ा खूबसूरत भी है गणित। इनमें कितने सुन्दर पैटर्न, अजब-गजब रिश्ते और खासियतें सिमटी होती हैं। समझ जाओ तो फिर ये हमेशा खास बनी रहती हैं। मेरे एक दोस्त का फोन नम्बर था - 2427305 - जो मुझे कभी याद न रहता। फिर एक और दोस्त ने इसे याद रखने का तरीका बताया। 24+3 = 27, 27+3 = 30 अन्त में 5 । अब हालत यह कि उनका फोन कटे सालों बीत गए लेकिन नम्बर आज तक न याद है। यहाँ कुछ ऐसे ही मज़ेदार पैटर्न दिए गए हैं। बस संख्याओं को जोड़ते और गुणा करते जाओ।

● जयश्री सुब्रह्मणयन्

8 के गुणा की उलटम-पुलटम

1 x 8 + 1 = 9
12 x 8 + 2 = 98
123 x 8 + 3 = 987
1234 x 8 + 4 = 9876
12345 x 8 + 5 = 98765
123456 x 8 + 6 = 987654
1234567 x 8 + 7 = 9876543
12345678 x 8 + 8 = 98765432
123456789 x 8 + 9 = 987654321

क्यूँ है 9 दीवाना 8 का

9 x 9 + 7 = 88
98 x 9 + 6 = 888
987 x 9 + 5 = 8888
9876 x 9 + 4 = 88888
98765 x 9 + 3 = 888888
987654 x 9 + 2 = 8888888
9876543 x 9 + 1 = 88888888
98765432 x 9 + 0 = 888888888

यह क्या? 9 दीवाना 1 का भी

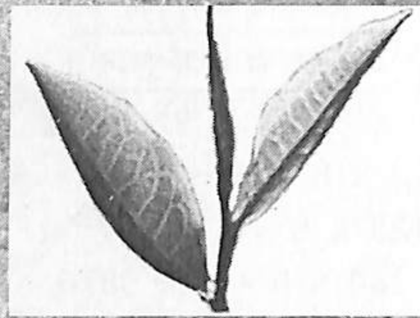
1 x 9 + 2 = 11
12 x 9 + 3 = 111
123 x 9 + 4 = 1111
1234 x 9 + 5 = 11111
12345 x 9 + 6 = 111111
123456 x 9 + 7 = 1111111
1234567 x 9 + 8 = 11111111
12345678 x 9 + 9 = 111111111
123456789 x 9 + 10 = 1111111111

वल्लाह क्या 'फिगर' है

1 x 1 = 1
11 x 11 = 121
111 x 111 = 12321
1111 x 1111 = 1234321
11111 x 11111 = 123454321
111111 x 111111 = 12345654321
1111111 x 1111111 = 1234567654321
11111111 x 11111111 = 1234567654321
111111111 x 11111111 = 123456787654321
111111111 x 111111111 = 12345678987654321

एक कली दो पत्तियाँ

● डॉ. रमेशदत्त शर्मा



ज़रा मेरी ओर देखो तो। देखो, मेरी हरी-हरी टहनियाँ और हरी पत्तियाँ। यह हरी-हरी झाड़ी ही मेरा शरीर है। और मेरी पहचान है हर हरी फुनगी के ऊपर लगी एक कली और उसके अगल-बगल लगी दो पत्तियाँ। हाँ जी, एक कली और दो पत्तियाँ। पहचाना तुमने। नहीं न। मैं तुम्हारे सामने इस रूप में आती ही कहाँ हूँ। या तो डिब्बे में बन्द होती हूँ या केतली में भरी होती हूँ, या फिर दूध और शक्कर मिलाकर प्याले में या गिलास में होती हूँ या गरमागरम कुल्हड़ में होती हूँ। अब तो पहचान गए न।

रोचक है मेरी कहानी...

कहते हैं कि आज से कोई पाँच हज़ार साल पहले चीन में मेरा जन्म हुआ था। टी कहो या चाय ये दोनों नाम चीनी भाषा की देन हैं। मेरी तारीफ के पुल बाँधे गए हैं चीनी भाषा की किताबों में।

पर सबसे ज़्यादा मुझे अपनाया जापान ने। कमाल की बात तो यह है कि मेरे जापान पहुँचने का किस्सा जिन बौद्ध संत के साथ जुड़ा है, वे वहाँ भारत से गए थे। कहते हैं दारूमा नाम के ये बौद्ध भिक्षु नौ वर्ष तक एक कंदरा में दीवार के साथ बैठकर तपस्या करते रहे। एक दिन की बात है कि ध्यान करते-करते उन्हें नींद आ गई। नींद से जागे तो बेचारे बड़े पछताए। पश्चाताप में उन्होंने अपनी पलकें ही नोंच कर फेंक दी। कहा जाता है कि जहाँ जमीन पर उनकी पलकें गिरीं, वहाँ मैं उग आई। संत ने मेरी पत्तियों का काढ़ा बनाकर पिया तो नींद गायब हो गई। बस तब से मैं नींद और आलस भगाने वाले गरम पेय के रूप में सारी दुनिया में मशहूर हो गई।



जापान में तो चाय बनाना और पीना एक तरह का धार्मिक उत्सव ही समझिए। चाय पीने का कमरा भी वहाँ पूजा घर की तरह अलग होता है। हाथ-मुँह धोकर ही आप वहाँ जा सकते हैं। फिर बारी-बारी से सभी मेहमान दीवार पर लगी एक तस्वीर या आले के सामने झुकते हैं। बाकायदा चटाई पर बैठकर खासतौर से बने प्याले में, सबसे पहले मुख्य अतिथि जोर से सुड़कने की आवाज करके चाय पीते हैं। फिर बारी-बारी से सभी मेहमान घूँट लेते हैं।

भारत में...

भारत में मेरा प्रचलन उन्नीसवीं सदी के तीसरे दशक में हुआ यानी यही कोई पौने दो सौ साल पहले। असम के जंगलों में ब्रूस नाम के एक अंग्रेज़ साहब को मेरा पता चला था। उन्हें आदिवासियों के गाँव के मुखिया ने मेरा पता दिया था। कहते हैं कि भारत में पहला चाय का बाग इन्हीं ब्रूस महोदय ने

लगाया था। चीन से भी चाय की पौधे और बीज मँगाए गए। धीरे-धीरे असम की सुरमा घाटियों, दार्जिलिंग और जलपाईगुड़ी की पहाड़ियों के अलावा, उत्तर में देहरादून, कांगड़ा और कुमायूँ तथा दक्षिण में मलाबार और नीलगिरि की पहाड़ियों पर भी मेरे बाग के बाग पनपते चले गए। और सारी दुनिया में इंडिया टी यानी भारत की चाय की धूम मच गई। विश्व के चाय व्यापार में भारत का दूसरा नंबर है। हमारी चाय का सबसे बड़ा खरीददार इंग्लैण्ड है। उसके बाद रूस और अमरीका का नंबर आता है। तो देखा, कितने देशों की नींद उड़ा रक्खी है मैंने!

मुझे पसंद है ...



मुझे गर्मी पसंद नहीं है। पहाड़ों की जलवायु मुझे भाती है। मुझे प्यास बहुत लगती है। जी करता है हर समय बादलों की झड़ी लगी रहे और मैं उसमें नहाती रहूँ। जिस साल सूखा पड़ता है, उस साल मेरी फसल को बड़ा नुकसान पहुँचता है। मैं जिन पहाड़ियों पर उगाई जाती हूँ, वहाँ खूब वर्षा होती है।

मैं इतनी कोमल होती हूँ कि मुझे खुली धूप नहीं भाती। हाँ, किसी पेड़ की छाया हो, तो मेरा तन-मन खिल उठता है। और तो और मेरी जड़ें ऐसी मिट्टी में अच्छी बढ़ती हैं, जो अम्लीय हो। ऊपर से इस मिट्टी में खासतौर से नाइट्रोजन वाली खाद भी मिली होनी चाहिए और गोबर की खाद भी। एक बार जब मैं जम गई तो फिर अपनी टहनियाँ और पत्तियाँ इस तेजी से बढ़ाती हूँ कि उनकी कटाई-छँटाई करनी पड़ती है। नहीं, तो मैं इतनी ऊँची हो जाऊँ कि मेरी फुनगियों पर लगी एक कली और दो पत्ती तोड़ने वालियों के हाथ ही वहाँ तक न पहुँचें।

बागान से दुकान का सफर...

एक बार चुनाई (यानी पत्तियों को तोड़ना) के बाद 7 से 10 दिन के अंदर ही मेरी फुनगियों में नयी कलियाँ आ जाती हैं। इस तरह एक मौसम में मेरी 5-6 बार चुनाई की जा सकती है।

चुनाई के बाद मेरी कली और पत्तियों को सुखाया जाता है। फिर उनमें खमीर उठाया जाता है। फिर से सुखाया जाता है। फिर छँटाई होती है और उसके बाद भराई या पैकिंग। अब तो ये सारे काम मशीनों से किए जाते हैं। इस तरह मेरी कई किस्में तैयार की जाती हैं- काली चाय, हरी चाय, ऊलाँग चाय, ईंटिया चाय, और लटपट चाय।

लटपट चाय असम और ब्रह्मा की कुछ पहाड़ियों में तैयार करते हैं। इसमें हरी पत्तियों को उबालकर या उन पर से भाप गुजारकर या उन्हें पक्के गड्ढों में भर देते हैं। इस लटपट चाय को, पीते नहीं, इसकी चटनी बनाते हैं या फिर सब्जी बनाते हैं।

मज़े की बात यह है कि चाय को चखने के लिए हजारों रुपए महीने का वेतन दिया जाता है। असल में चाय को चखकर उसकी क्वालिटी बता देना बड़ी ऊँची कारीगरी मानी जाती है। सिर्फ यही पेशा ऐसा है जिसमें लोग जीभ की बदौलत कमाई करते हैं। तो चलो अब एक कप चाय हो जाए। ●

साइबोर्ग : कल का मानव

● कल्पना कुलश्रेष्ठ

साइबोर्ग इंसान और मशीन का मिला जुला रूप है। साइबोर्ग अंग्रेज़ी के दो शब्दों से बना है। साइबरजेनटिक और ऑर्गेनिज़्म। साइबरजेनटिक का अर्थ है इंसानों और मशीनों को नियंत्रित करने के तरीकों का विज्ञान या अध्ययन। ऑर्गेनिज़्म यानी जीव। 1960 में मैनफ्रेड क्लेनेस ने साइबोर्ग शब्द ईजाद किया। शुरू-शुरू में साइबोर्ग एक ऐसे व्यक्ति को कहा जाता था जिसके शरीर के अंग अपना कामकाज किसी उपकरण की सहायता से करते थे। इन उपकरणों में ऑक्सीजन का सिलण्डर, हृदय का कृत्रिम वॉल्व या पेसमेकर आदि कोई भी हो सकता है। कुछ सालों बाद एक ऐसा व्यक्ति भी साइबोर्ग कहलाने लगा जो अपने रोज़ाना के कामकाजों के लिए कम्प्यूटर या किसी टेक्नॉलॉजी पर निर्भर करता है।

एक ऐसे सुपरमैन की कल्पना करो जिसे गाड़ी चलाने के लिए अपने हाथ या पाँव की जरूरत नहीं पड़ती। उसे बस गाड़ी चलाने के बारे में सोचना भर होगा। उसकी स्मरण क्षमता एक आम मनुष्य से कई गुना अधिक है। वह बिना कुछ कहे अपनी बात दूसरे को समझा सकता है। हम साइबोर्ग की ही बात कर रहे हैं। साइबोर्ग अर्थात् मनुष्य और मशीन का संगम। एक ऐसा मनुष्य जिसकी शारीरिक क्रियाएँ कम्प्यूटर के माइक्रोचिप द्वारा चलती हैं।

दुनिया के पहले साइबोर्ग

ब्रिटेन के प्रोफेसर डॉ. केविन वारविक दुनिया के पहले साइबोर्ग माने जाते हैं। मार्च 2002 में दो घण्टे लम्बे ऑपरेशन द्वारा उनकी बाईं बाँह में माइक्रोचिप के साथ एक छोटा कम्प्यूटर चस्पा किया गया। इस कम्प्यूटर से जुड़े सौ इलैक्ट्रोडों को उनकी मुख्य तंत्रिका से जोड़ दिया गया है। इस प्रकार डॉ. वारविक मनुष्य और मशीन के मिले-जुले रूप यानी साइबोर्ग में बदल गए। इलैक्ट्रोड उनकी बाईं बाँह से आने वाले तंत्रिका संकेतों को रेडियो ट्रांसमिशन द्वारा एक कम्प्यूटर को भेज देते थे। यह सारी प्रक्रिया उनकी बाईं कलाई पर बंधी कम्प्यूटराइज़्ड मशीन द्वारा नियंत्रित की जाती थी। अब वह दूर से ही बल्ब जला या बुझा सकते हैं। दरवाजे खोल या बन्द कर सकते हैं। कॉफी मशीन, ए.सी. व माइक्रोवेव ओवन चला या रोक सकते हैं। एक प्रदर्शन के दौरान उन्होंने कई किलोमीटर दूर रखे एक रोबोटिक हाथ को टैलीपैथी द्वारा सक्रिय करके दिखाया था।

मैं बोलूँ, मशीन लिखे...

'कैम्ब्रिज अडैप्टिव कम्युनिकेशन्स के डेविड मैसन ने मेरी व्हील चेयर में एक छोटा कम्प्यूटर और एक स्पीच सिंथसाइज़र जोड़ दिया। इससे मैं अपने आप को ज़्यादा बेहतर तरीके से अभिव्यक्त कर पाता हूँ। मैं एक मिनट में 15 शब्द तक बोल लेता हूँ। मैं अपनी लिखी चीज़ों को बोल पाता हूँ। उन्हें कम्प्यूटर में लोड कर पाता हूँ। बाद में मैं इनका प्रिंट ले लेता हूँ और एक-एक वाक्य करके सारी बात पढ़ लेता हूँ। इन्हीं उपकरणों की मदद से मैंने एक किताब और दर्जनों वैज्ञानिक पर्चे लिखे हैं।'

• मशहूर वैज्ञानिक स्टीवन हॉकिंस

निकट भविष्य में जब तकनीक और अधिक विकसित होगी तो एक उन्नत साइबोर्ग और अनूठा हो जाएगा। मनुष्य की सीमित ज्ञानेन्द्रियों की तुलना में साइबोर्ग अधिक क्षमता वाला होगा।

यदि साइबोर्ग के तंत्रिका तंत्र को एक ऐसी मशीन से जोड़ दिया जाए जो गाड़ी चलाने में सक्षम हो तो मात्र विचारों की सहायता से वह गाड़ी चला सकेगा, वह भी कई किमी दूर से। तंत्रिका तंत्र में इलैक्ट्रोड जोड़कर उसे मशीनी बना देने का एक परिणाम यह भी होगा कि अनचाही भावनाओं जैसे क्रोध, भय या आशंका को वश में करना संभव हो जाएगा। तब शायद मनुष्य आज की तरह तनावग्रस्त नहीं रहेगा।

बाँह के अंदर लगा हुआ स्मार्ट चिप शरीर का तापमान व आन्तरिक गड़बड़ियों आदि की जानकारी दे पाएगा। वह यह भी बता सकेगा कि फलाँ व्यक्ति इस समय कहाँ है। किसी चिपयुक्त बच्चे के अपहरण होने पर उसका पता ठिकाना खोजना आसान हो जाएगा। ऐसे चिपयुक्त बच्चे गुम जाने पर उन्हें आसानी से ढूँढा जा सकता है। तब साइबोर्ग की उस दुनिया में वे आपस में बातें करने के लिए भाषा का प्रयोग नहीं करेंगे। वे मात्र विचारों यानी टेलीपैथी की सहायता से आपस में बातचीत किया करेंगे, वैसे ही जैसे डॉ. वारविक अपनी साइबोर्ग पत्नी इरेना से करते हैं।

इतने सारे फायदों के साथ कुछ नुकसान भी होंगे। जैसे जिस तकनीक से हमने लोगों की जान बचाने वाले उपकरण बनाए उसी तकनीक से हमने बम भी बनाए। साइबोर्ग के चलन से व्यक्ति की गोपनीयता और निजता नाम की कोई चीज़ नहीं रहेगी। आने वाले समय में यह भी संभव है कि उन्नत बुद्धिमान मशीनें साइबोर्ग पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लें। मनुष्य स्वतंत्र रूप से न सोच कर उन्हीं के निर्देशानुसार कार्य करने लगे। किसी भी तकनीक का सदुपयोग या दुरुपयोग हम पर ही निर्भर करता है। तो चलें भविष्य की उस दुनिया में, जिसके साइबोर्ग-समाज के एक सदस्य तुम भी हो सकते हो। क्या नाम है तुम्हारा? ओह नहीं.... क्या कोड है तुम्हारा! ●

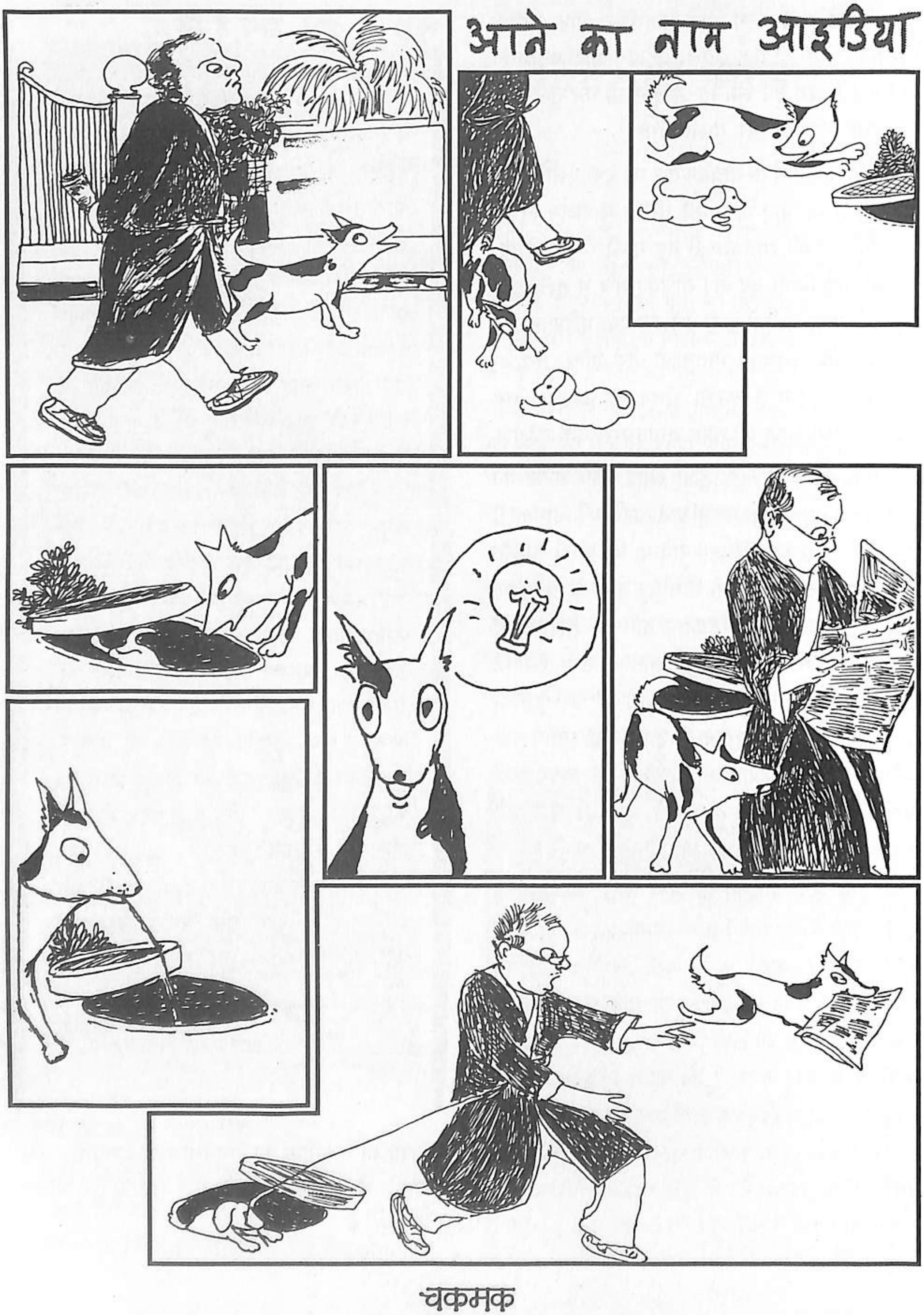
हाथ है कि...

अगस्त 1998 की बात है जब मेरी बाईं बाँह पर एक चिप लगाई गई। बाईं पर मैंने इसलिए लगवाई ताकि कोई गड़बड़ी हो जाए तो भी मेरा दाहिना हाथ सुरक्षित रह सके। शरीर के इस हिस्से की अधिकाँश तंत्रिकाएँ हाथ से जुड़ी हुई हैं, तथा यहाँ की अधिकाँश तंत्रिकाएँ दक्षता, भावनाओं आदि को नियंत्रित करने वाले इलेक्ट्रॉनिक आवेगों को भेजती व ग्रहण करती हैं। यहाँ ऐसे संकेतों का आना-जाना लगा रहता है। यहाँ रीढ़ की हड्डी और मस्तिष्क के अलावा सबसे ज़्यादा जानकारी होती है।

नौ दिनों तक यह उपकरण सही तरह से काम करता रहा। इस प्रयोग का उद्देश्य यह जाँचना था कि क्या सूचनाएँ चिप के जरिए मुझ तक आ और जा सकती हैं। प्रयोग सफल रहा। कम्प्यूटर और मेरे तंत्रिका तंत्र से संकेत आ और जा रहे थे। उदाहरण के लिए जब मैं अपनी एक उँगली हिलाता तब मस्तिष्क से एक विद्युत आवेग निकलता। यह आवेग मेरे हाथ को हिलाने-डुलाने वाली माँसपेशियों को सक्रिय करता है। कालर इस संकेत को बीच में ही पकड़ लेती है। तंत्रिकाओं के आवेग फिर भी उँगली तक पहुँच जाते हैं। लेकिन हमारी चिप इसमें सेंध लगाकर इसे कम्प्यूटर में जमा कर लेती है। यहाँ इसमें बदलाव किए जाते हैं और वापस चिप में भेज दिए जाते हैं।

● केविन वारविक

आने का नाम आइडिया



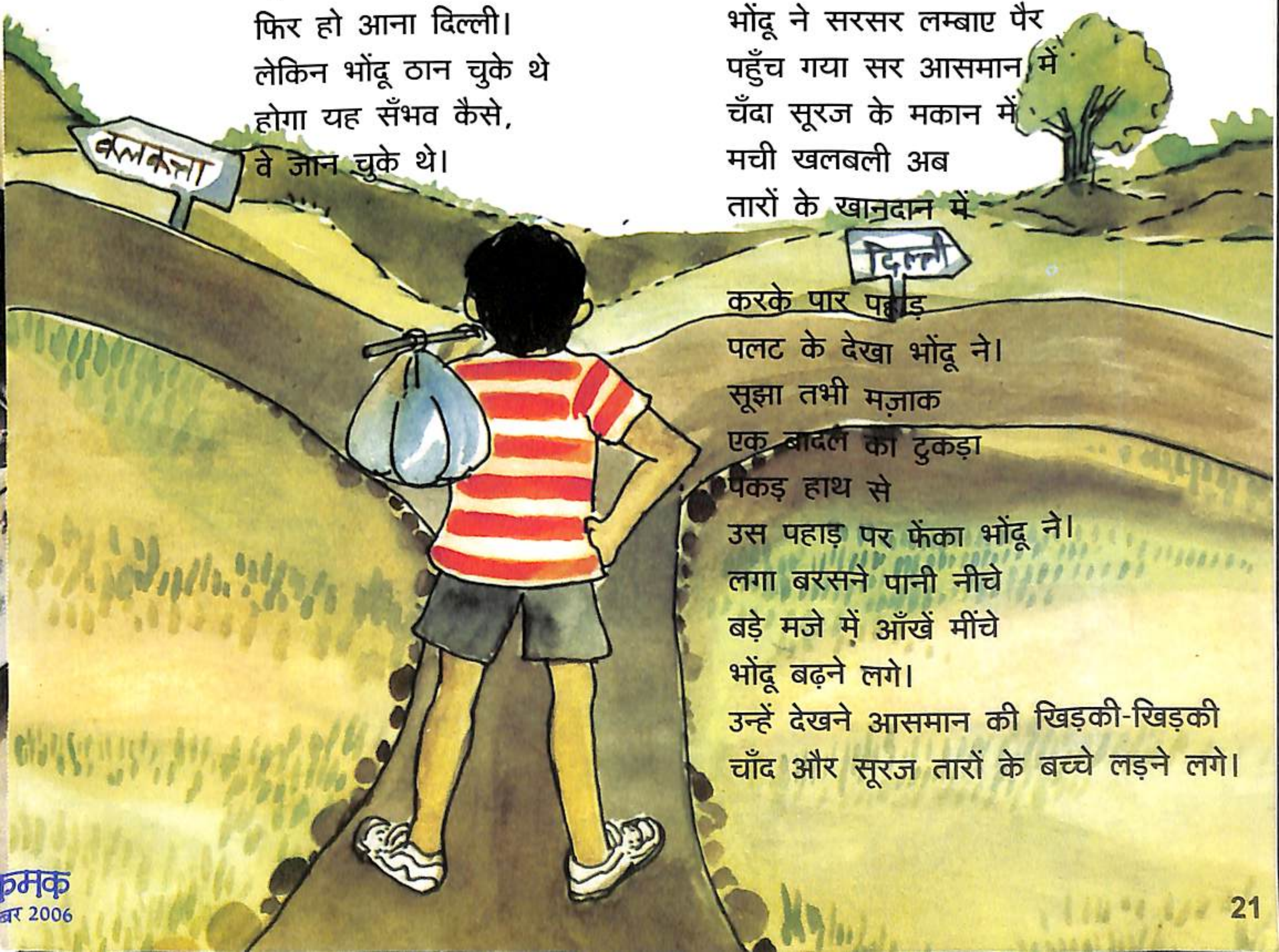
भोंदूजी

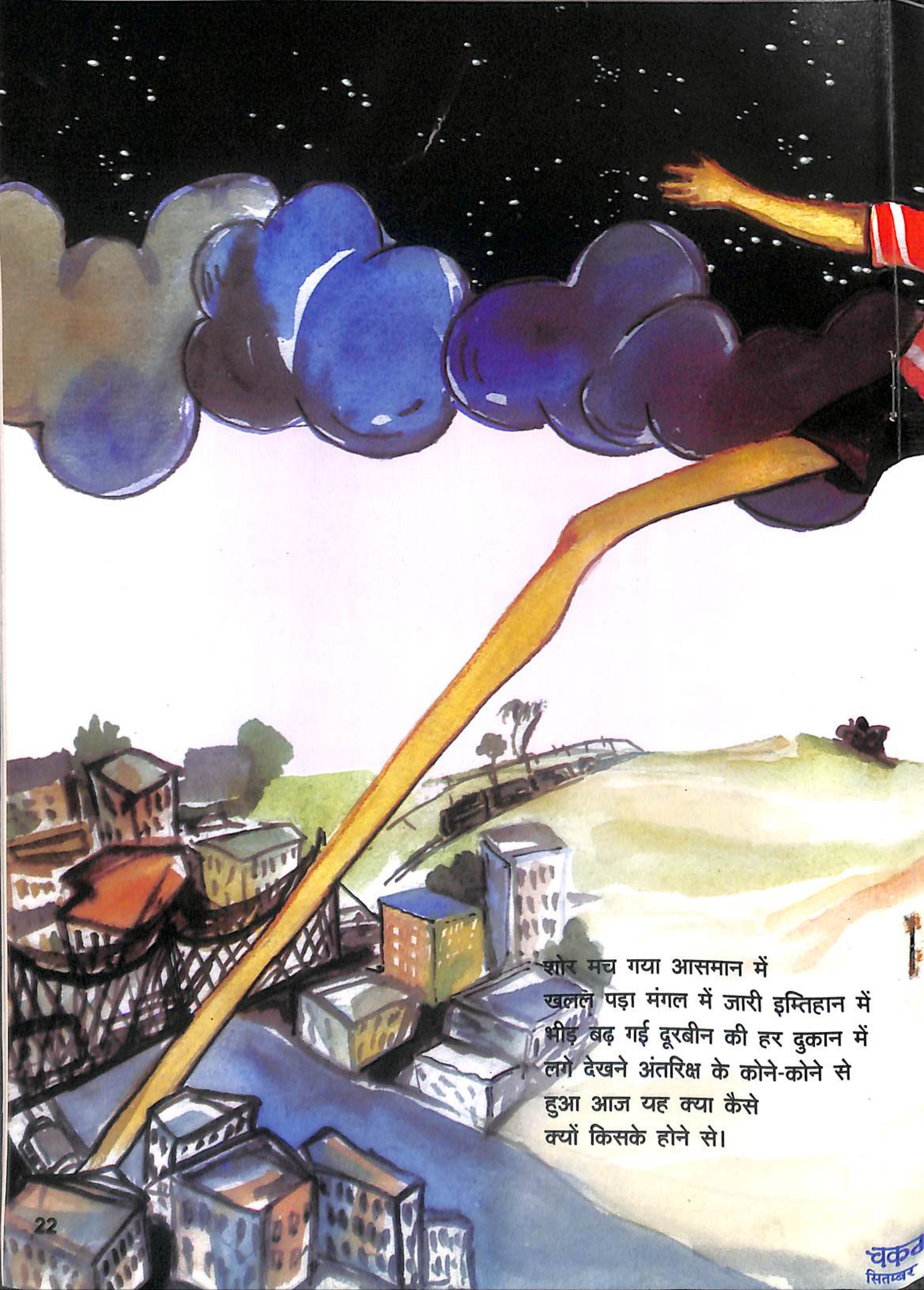
• नवीन सागर

एक पाँव दिल्ली में होगा
दूजा कलकत्ते में
इस निश्चय से कदम बढ़ाए
भोंदू ने रस्ते में।
बायाँ पाँव चला दिल्ली को
दायाँ कलकत्ते को
हँसी आई रस्ते को।
बोला खूब उड़ा के खिल्ली
अकल लगाओ चिल्ली
जाओगे दो तरफ गिरोगे
पहले कलकत्ते हो आओ
फिर हो आना दिल्ली।
लेकिन भोंदू ठान चुके थे
होगा यह सँभव कैसे,
वे जान चुके थे।

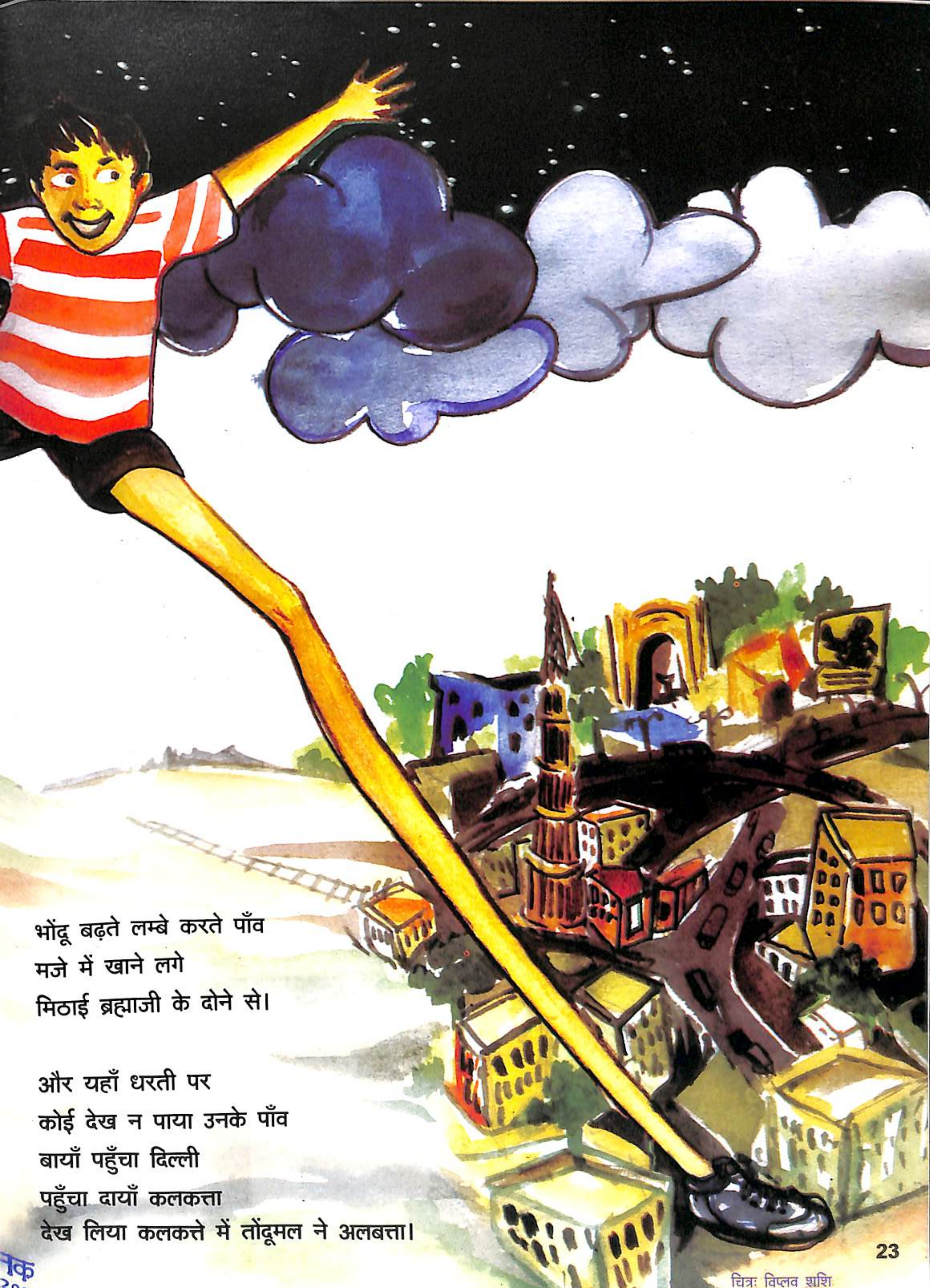
जितना आगे बढ़ते जाते
करते जाते उतने लम्बे पाँव
दो पाँवों के बीच
फासला बढ़ता जाता
पार कर गए
धीरे-धीरे आसपास के गाँव।
आगे खड़ा पहाड़ हँसा
अब कैसे निकलोगे
टकराएगा पेट और
तुम औंधे मुँह होगे।
समझ गए दिक्कत है लेकिन खैर
भोंदू ने सरसर लम्बाए पैर
पहुँच गया सर आसमान में
चँदा सूरज के मकान में
मची खलबली अब
तारों के खानदान में

करके पार पहाड़
पलट के देखा भोंदू ने।
सूझा तभी मज़ाक
एक बादल का टुकड़ा
पकड़ हाथ से
उस पहाड़ पर फेंका भोंदू ने।
लगा बरसने पानी नीचे
बड़े मजे में आँखें मींचे
भोंदू बढ़ने लगे।
उन्हें देखने आसमान की खिड़की-खिड़की
चाँद और सूरज तारों के बच्चे लड़ने लगे।





शोर मच गया आसमान में
खलल पड़ा मंगल में जारी इम्तिहान में
भीड़ बढ़ गई दूरबीन की हर दुकान में
लगे देखने अंतरिक्ष के कोने-कोने से
हुआ आज यह क्या कैसे
क्यों किसके होने से।



भोंदू बढ़ते लम्बे करते पाँव
मजे में खाने लगे
मिठाई ब्रह्माजी के दोने से।

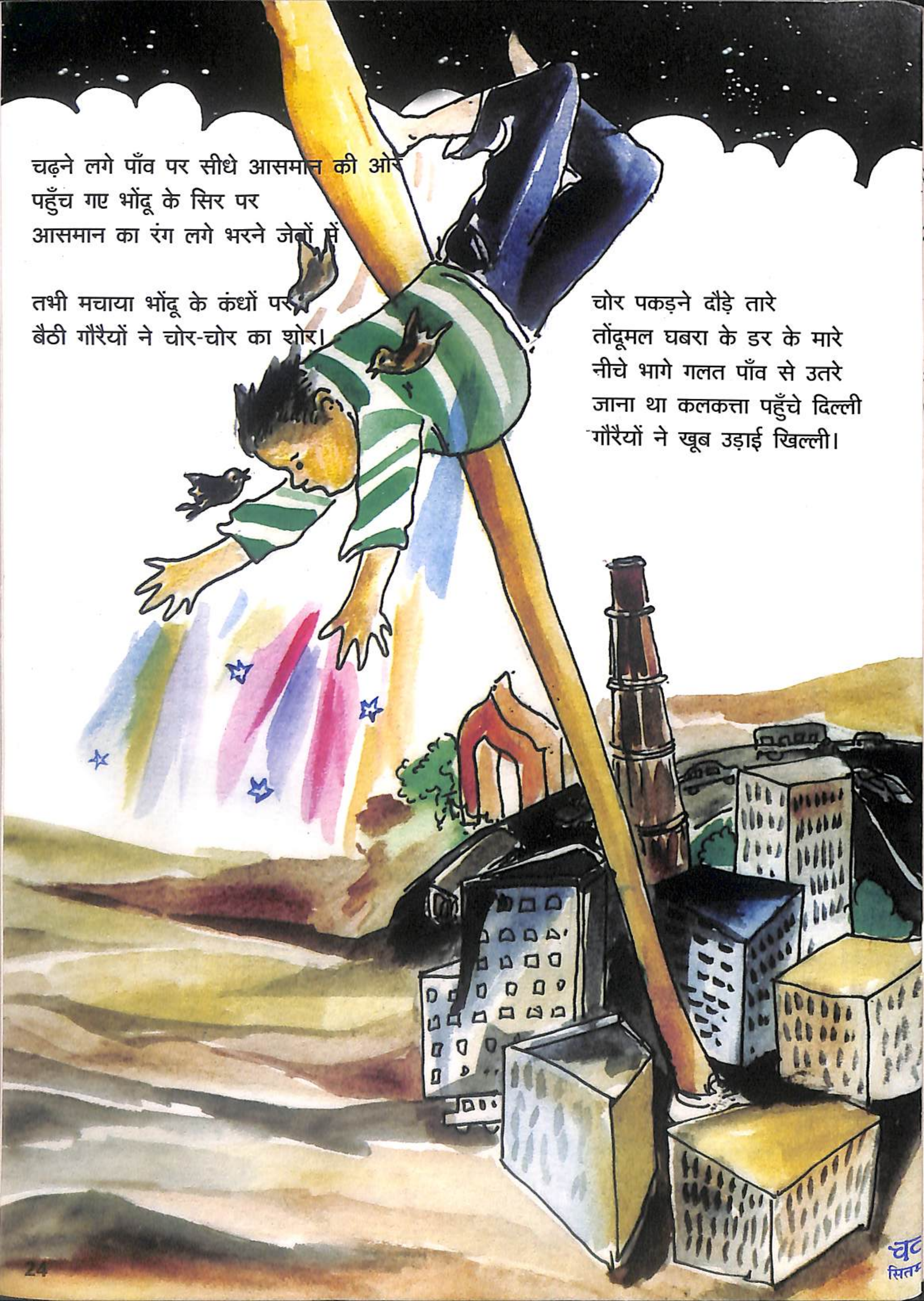
और यहाँ धरती पर
कोई देख न पाया उनके पाँव
बायाँ पहुँचा दिल्ली
पहुँचा दायाँ कलकत्ता
देख लिया कलकत्ते में तोंदूमल ने अलबत्ता।

चित्रः विप्लव शशि

चढ़ने लगे पाँव पर सीधे आसमान की ओर
पहुँच गए भोंदू के सिर पर
आसमान का रंग लगे भरने जेबों में

तभी मचाया भोंदू के कंधों पर
बैठी गौरैयों ने चोर-चोर का शोर।

चोर पकड़ने दौड़े तारे
तोंदूमल घबरा के डर के मारे
नीचे भागे गलत पाँव से उतरे
जाना था कलकत्ता पहुँचे दिल्ली
गौरैयों ने खूब उड़ाई खिल्ली।





बुंदेली लोककथा

नटखटलाल

● गोपीचन्द श्रीनागर

आखिरकार, नटखटलाल नहीं माने और अपने हमउम्र सफेद टट्टू पर सवार हो अपनी ननिहाल की ओर चल दिए। नटखटलाल की माँ ने उसे भलीभाँति समझा दिया कि वह रास्ते में कोई शैतानी न करे। उसकी माँ ने भी सोचा कि चलो छुट्टियों में, घर में शैतानी करने के बदले अगर वह कुछ घूम-फिर ले तो अच्छा ही होगा।

नटखटलाल के नाना जाने-माने लेखक थे। जिनकी लिखी कहानियों की चर्चा जंगल के कोने-कोने में हुआ करती थी। दूर-दूर के जानवर अपने इस प्रिय लेखक कहानी सुनने आया करते थे।

नटखटलाल नाना के घर पहुँचा। नाना ने उसे अपने सीने से लगा लिया। इधर-उधर की काफी सैर करवाई। उसे खाने में एक से एक बढ़िया पकवान मिले। लेकिन खाने की जिस चीज़ ने उसे सबसे ज़्यादा आकर्षित किया, वह केवल उसके नानाजी के सामने ही परोसी गई थी। नटखटलाल ने उसी चीज़ को खाने की जिद्द पकड़ ली।

वह चीज़ थोड़ी-सी मात्रा में उसकी थाली में भी परोसी गई। उसने उसे चखा। चीज़ जायकेदार लगी। वह उसे एक ही कौर में गप से खा गया। खाने के बाद, नटखटलाल ने अपनी नानी से उस स्वादिष्ट चीज़ का नाम जानना चाहा। नानी ने कहा, "बेटा, इसे खिचड़ी कहते हैं।" अब क्या था नटखटलाल ने खिचड़ी, खिचड़ी की रटन्त लगा दी। उसने सोचा कि घर लौटने पर, वह रोज खिचड़ी खाएगा।

नाना से विदा लेकर वह खुशी-खुशी घर की ओर चल पड़ा। उसका सफेद टट्टू नाना के यहाँ से पहले ही भाग आया था। रास्ते में पैदल चलते-चलते वह खिचड़ी... खिचड़ी रटता रहा। लेकिन वह जाने कब अपनी धुन में खाचिड़ी, खाचिड़ी बोलने लगा। यह सुनकर खेत पर काम कर रही एक किसानिन ने उसे घुड़काया, "ऐसा मत बोल, नहीं तो दूसरे किसान मार-मार कर तेरा भुरता बना देंगे। उनकी मेहनत की कमाई को तू, पक्षियों को खिला देना चाहता है।" नटखटलाल घबरा गया। उसने पूछा, "तो मैं क्या कहूँ?" किसानिन बोली, "बेटा, कह उड़चिड़ी, उड़चिड़ी।"

अब नटखटलाल खिचड़ी की जगह उड़चिड़ी, उड़चिड़ी की ज़ोर-ज़ोर से रट लगाता आगे चला। अभी





वह मुश्किल से कुछ ही दूर गया होगा कि चिड़ियों को फाँसने के लिए अपना जाल फैलाए ताक में बैठा एक चिड़ीमार उसे घूरने लगा। नटखटलाल उसकी आँखें देखकर सहम गया। चिड़ीमार ने गरजकर कहा, "देखता नहीं है कि मैं भोर से जाल उठाए चिड़ियों की तलाश में मारा-मारा फिर रहा हूँ और तू उड़चिड़ी, उड़चिड़ी का नारा बुलन्द करता चला जा रहा है। ऐसे में भला कौन चिड़िया मेरे जाल में फँसने आएगी। तू मुझे भूखों मार डालने का इरादा रखता लगता है। भाग यहाँ से, नहीं तो तेरी खैर नहीं है।"

चिड़ीमार की डाँट सुनते ही नटखटलाल की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। अब वह उड़चिड़ी भी नहीं कह सकता था।

इस घोर असमंजस की हालत में किसी प्रकार नटखटलाल आगे बढ़ा। उसका अपना घर भी नजदीक आता जा रहा था। वह अपने मन पसन्द भोजन का नाम भूल गया था। उदास मन नटखटलाल अपने घर में घुसा। घर में घुसते ही रसोईघर से उसे बड़ी सोंधी-सोंधी खुशबू आती लगी। वह भागा-



भागा रसोईघर में गया। उसने देखा कि घर का पुराना महाराज एक बड़े पतीले में कुछ पका रहा है। नटखटलाल से न रहा गया। उसने पूछा, "काका, आज क्या बना रहे हो?"

महाराज बोला, "बेटा, आज जल्दी में अपने लिए कुछ खिचड़ी पका ली है।" खिचड़ी का नाम सुनते ही नटखटलाल की सारी थकान रफू-चक्कर हो गई और उसके मुँह से लार टपकने लगी। ●

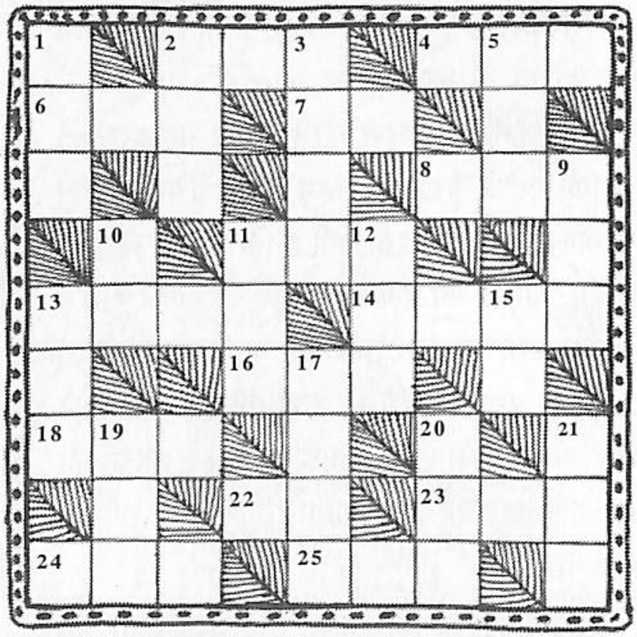
चित्र - विवेक वर्मा

ढब्बूजी...

आबिद सुरती



चित्र पहेली

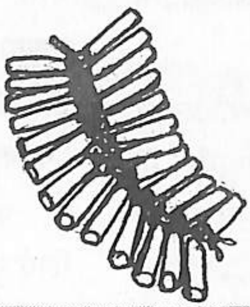


बाएँ से दाएँ

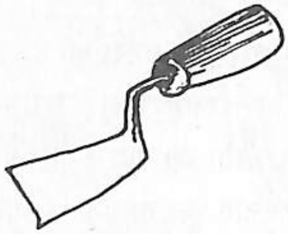
4.



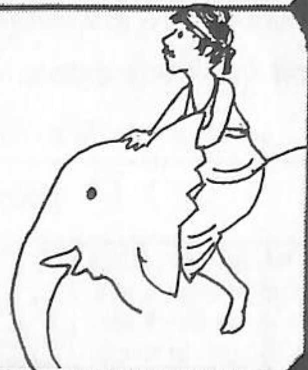
7.



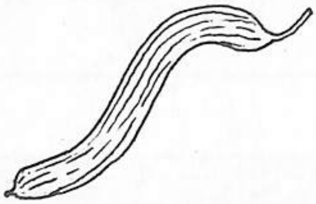
8.



13.



16.



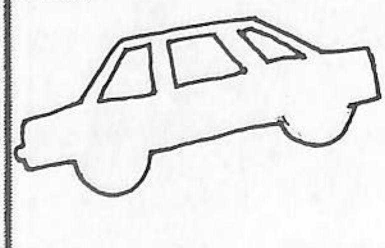
18.



22.



24.



25.



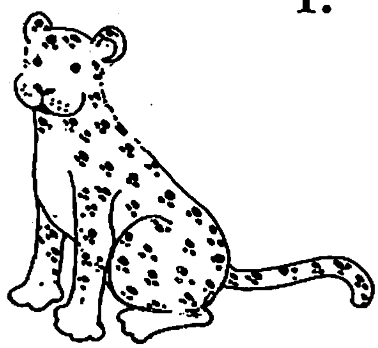
संकेत- बाएँ से दाएँ

2. दसतक पर स पूरा नहीं
6. लाड़ या प्यार
11. बासमती मेरी ही एक किस्म है
14. एक तरल ताली बजाए
23. कलकत्ता का पुल

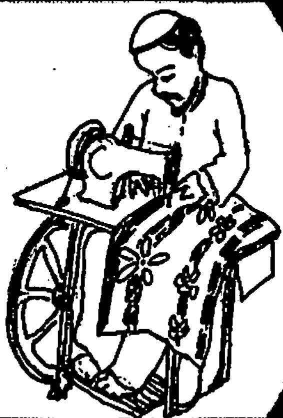
संकेत ऊपर से नीचे

3. पक्षियों की चहचहाहट
11. चकोर के साथ अकसर मेरा नाम आता है
17. बरकत की उलटफेर में कमाल है
20. तीसरा हिस्सा यानी ...

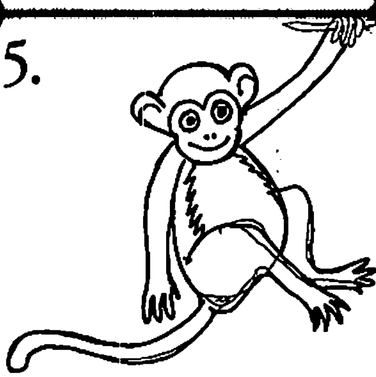
1.



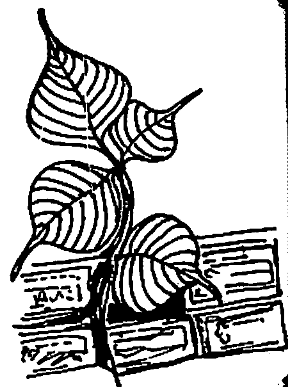
2.



5.



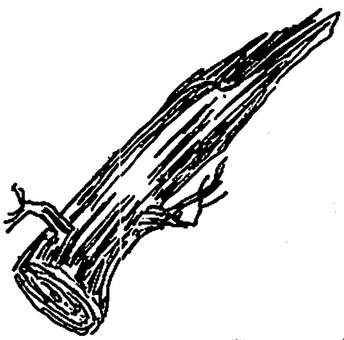
9.



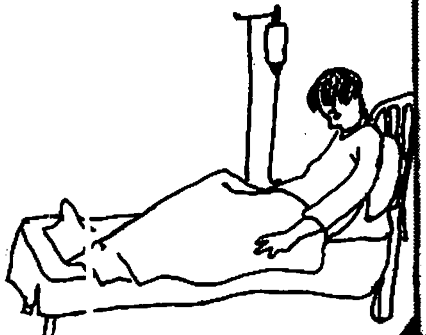
10.



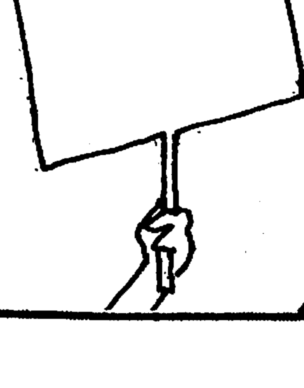
12.



13.



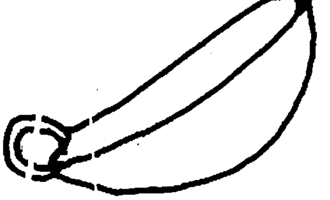
15.

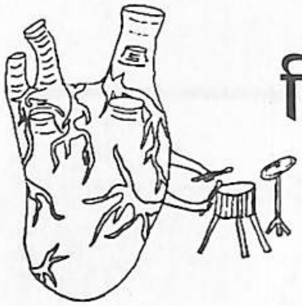


19.



21.





दिल है कि धड़कता है...

● शशि सबलोक

दिल का धड़कना यानी हृदय की कुछ खास माँसपेशियों का सिकुड़ना-फैलना और हर धड़कन के साथ खून का नसों में बहना।

हर अंग, हर माँसपेशी तक खून और पोषण की सप्लाई के लिए जीने के लिए बहुत ही ज़रूरी है दिल का यह काम। हम चाहे सोएँ, जागें, खाएँ या रोएँ। दिल है कि धड़कता ही जाता है। हाँ, कभी-कभार अपनी रफ्तार ज़रूर बदल देता है। जैसे हम सोएँ तो यह भी ज़रा सुस्ता लेता है। कसरत करें तो इसकी रफ्तार भी बढ़ जाती है। डर या तनाव जैसी स्थिति में भी धड़कन तेज़ हो जाती है। एक मोटा अनुमान है कि हमारे पूरे जीवनकाल में यह कोई 1,500,000,000 बार धड़कता है।

धकधक...धकधक...

डॉक्टर मरीज़ की नाड़ी पर हाथ रखकर घड़ी देखता है। दिल तो सीने में धड़कता है फिर नाड़ी पर हाथ रखकर ऐसा क्या जान लेता है वो।

दरअसल हृदय से पम्प किए खून को अंग-अंग तक पहुँचाने वाली धमनियाँ कुछ जगहों पर त्वचा के एकदम नीचे से गुज़रती हैं। ये जगहें हैं -कलाई, गरदन, कोहनी आदि। जब हृदय खून को पम्प करता है तो दबाव तरंगें पैदा होती हैं। इसी वजह से कलाई, गरदन, कोहनी आदि जगहों के नीचे की धमनी फुदकती-सी है। अगर हम अपनी दो-तीन उँगलियों को कलाई पर उठी हड्डी के ऊपर रखकर हलके से दबाएँ तो इसे महसूस किया जा सकता है। अधिकांश मामलों में नाड़ी के फुदकने और हृदय के धड़कने की गति बराबर होती है। लेकिन कभी-कभी धड़कनें नाड़ी से कहीं ज़्यादा हो सकती हैं। ऐसा तब हो सकता है जब हृदय द्वारा पैदा की गई तरंगों का दबाव इतना कम हो जिन्हें कलाई की शिराओं में महसूस नहीं किया जा सकता है।



कब-कितनी धड़कन

वैसे तो लोगों की धड़कन की एक सामान्य गति होती है। यह गति उनकी उम्र के हिसाब से बदलती है। जैसे-

किसकी	हृदय गति प्रति मिनट
पुरुष	70
स्त्री	75
(उक्त हृदयगति आराम की अवस्था की गति है, खिलाड़ियों में आराम की अवस्था में यह इससे कम हो सकती है और मोटे लोगों में ज़्यादा।)	
नवजात शिशुओं में	130-150
1-2 साल के बच्चों में	100-130
बच्चों में	90-110
किशोरों में	80-100
नींद के दौरान	40

लेकिन यह गति कई कारणों और स्थितियों में बदलती भी है। जैसे -

- बुखार में, कसरत के बाद, तनाव या डर की स्थिति में शरीर में ऑक्सीजन और पोषक तत्वों की ज़रूरत बढ़ जाती है। इसलिए हृदय गति भी बढ़ जाती है।
- कुछ दवाओं से भी धड़कन की गति प्रभावित होती है। किसी से तेज़ हो जाती है और किसी से धीमी।
- चाय, कॉफी, सिगरेट धड़कन को बढ़ा देती हैं।

धड़कन है कि थर्मामीटर!

सामान्य स्थिति में हृदय गति और शरीर के ताप के बीच सीधा रिश्ता होता है। लेकिन जब तुम न तो खेल कर आए हो, न डर या तनाव में हो, तब भी अगर तुम्हारी धड़कन बढ़ी हुई है तो हो सकता है तुम्हें बुखार हो। अगर धड़कन 10 प्रति मिनट बढ़ी हुई है तो शरीर का ताप 1 डिग्री सेल्सियस बढ़ा होगा। इसलिए अगर हमें अपने शरीर का सामान्य ताप और हृदय गति पता हो तो थर्मामीटर के बिना भी शरीर का ताप जाना जा सकता है। मान लो शरीर का सामान्य ताप है 99 डिग्री सेल्सियस। और हृदय की सामान्य गति है 70 प्रति मिनट। बुखार के वक्त यह गति बढ़कर 90 हो जाती है तो समझ जाएँ कि बुखार 101 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच चुका है।

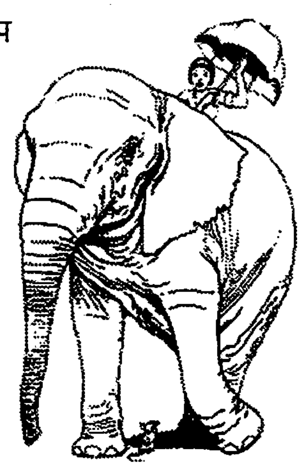
तेरी धड़कन मेरी धड़कन से अलग कैसे

तालिका में तुम देख चुके हो जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते जाते हैं उनके दिल की धड़कन धीमी होती जाती है। यह बात पशु-पक्षियों पर भी लागू होती है। पशु-पक्षियों के दिलों की धड़कन में काफी विविधता होती है। इसका एक मुख्य कारण है उनका आकार। शिशु और वयस्कों की धड़कन में अन्तर का भी यही कारण है।

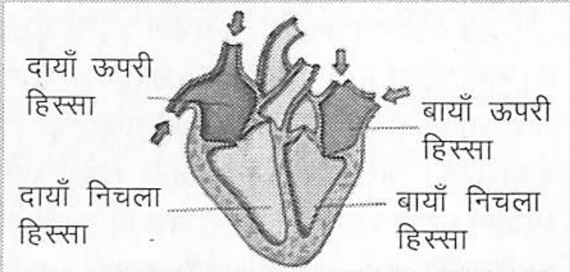
एक कारण है आकार...

अब देखें की आकार से धड़कन कैसे बदलती है। सभी जीवों में दो मुख्य चीज़ें होती हैं - आयतन और उनकी बाहरी सतह। मान लो तुम्हारे पास एक गुब्बारा है। जैसे-जैसे उसमें हवा भरोगे उसका आयतन बढ़ता जाता है। इससे उसकी बाहरी सतह भी खिंचकर बढ़ जाती है। लेकिन यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि आयतन बाहरी सतह की तुलना में ज़्यादा बढ़ता है। अलग-अलग आकार के जीवों में भी यही बात नज़र आती है। बड़े होते जाते जानवरों का आयतन उनकी बाहरी सतह की तुलना में कहीं ज़्यादा होता है। उदाहरण लेते हैं चूहे और हाथी का। चूहे और हाथी दोनों का आयतन उनकी बाहरी सतह की तुलना में ज़्यादा होता है। लेकिन हाथी के आयतन और बाहरी सतह में अन्तर चूहे की तुलना में कहीं ज़्यादा होता है। किसी जीव के आयतन में उसकी कोशिकाएँ, उसके अंग यानी सभी सजीव ऊतक शामिल होते हैं। ऊतकों से ताप पैदा होता है। इस ताप के कुछ हिस्से का बाहर निकलना ज़रूरी है। ताप कितना और किस तेज़ी से निकलेगा यह उस जीव की बाहरी सतह पर निर्भर करेगा।

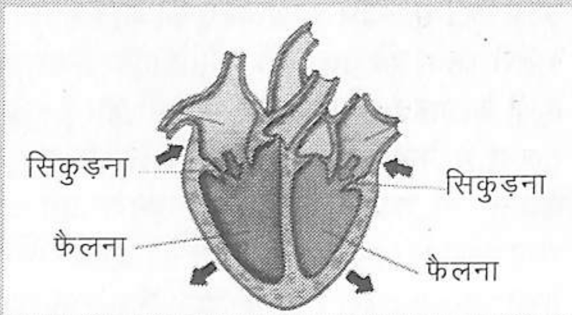
इसलिए एक बड़े जीव के मामले में स्थिति ऐसी होगी - ज़्यादा आयतन (यानी ज़्यादा ताप पैदा होगा), छोटी बाहरी सतह (यानी कम ताप का छूट पाना)। इसीलिए बड़े जीवों के अन्दरूनी कामकाज की दर कम होना ज़रूरी है जिससे कम ताप पैदा हो। इसीलिए बड़े जीवों में शरीर



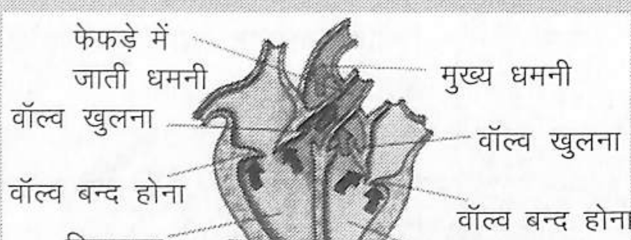
दिल का धड़कना यानी...



हृदय की दीवारों की माँसपेशियाँ आराम की अवस्था में हैं। पूरे शरीर और फेफड़ों से घूमता खून मुख्य शिरा से हृदय के ऊपरी दाएँ हिस्से में प्रवेश करता है। इस खून में ऑक्सीजन खत्म हो चुकी है। इसी वक्त फेफड़ों से ऑक्सीजन युक्त खून हृदय के ऊपरी बाएँ हिस्से में आता है।



हृदय के ऊपरी बाएँ और दाएँ हिस्से सिकुड़ते हैं। वॉल्व खुलते हैं और खून निचले हिस्सों में चला जाता है। दाईं तरफ के निचले हिस्से में ऑक्सीजन-रहित खून और बाएँ निचले हिस्से में फेफड़ों से आया ऑक्सीजन-युक्त खून।



निचले हिस्से सिकुड़ते हैं। वॉल्व खुलते हैं। और खून शिराओं में बह जाता है। दाईं ओर के हिस्से से खून ऑक्सीजन लेने फेफड़ों में जाता है। और बाईं ओर का ऑक्सीजन युक्त खून मुख्य धमनी से शरीर में चला जाता है। खून के झटके से जाने के बाद वॉल्व ज़ोर से बन्द होते हैं जिससे धक-धक की आवाज़ होती है।

के अन्य कामों के अलावा हृदय गति भी छोटे जीवों की तुलना में कम होती है। अगर ऐसा न हो तो स्थिति कुछ ऐसी हो सकती है-

मान लो एक चूहा है। जादूगर गोपीचन्द चूहे को खींचकर बिल्ली के आकार का बना देते हैं। आकार तो बदल गया लेकिन अन्दरूनी कामकाज की दर चूहे वाली ही रही। आयतन बढ़ा तो ताप कई गुना ज़्यादा बढ़ गया। जबकि बाहरी सतह ज़्यादा नहीं बढ़ी। इतने ज़्यादा ताप को शरीर से बाहर निकालने के लिए बाहरी सतह कम पड़ेगी।

कहते हैं जिसका दिल जितनी तेज़ी से धड़कता है उसकी उम्र उतनी ही कम होती है। इस सूची को देखकर इस धारणा की जाँच-परख करना। हाँ, शरीर के आकार और धड़कन की गति पर भी ध्यान देना।

जीव	हृदय गति प्रति मिनट	औसत उम्र वर्ष
इंसान	60	70
बिल्ली	150	15
मध्यम कुत्ता	90	15
चूज़ा	275	15
बंदर	190	15
घोड़ा	44	40
गाय	65	22
सुअर	70	25
खरगोश	205	9
हाथी	30	70
जिराफ	65	20
बड़ी व्हेल	20	80

अक्टूबर 2006 से

चकमक का चंदा बढ़ रहा है

कागज़ के दामों में वृद्धि होने के कारण हमें चकमक का चंदा बढ़ाना पड़ रहा है।

अक्टूबर 2006 से चकमक का चंदा इस प्रकार होगा -

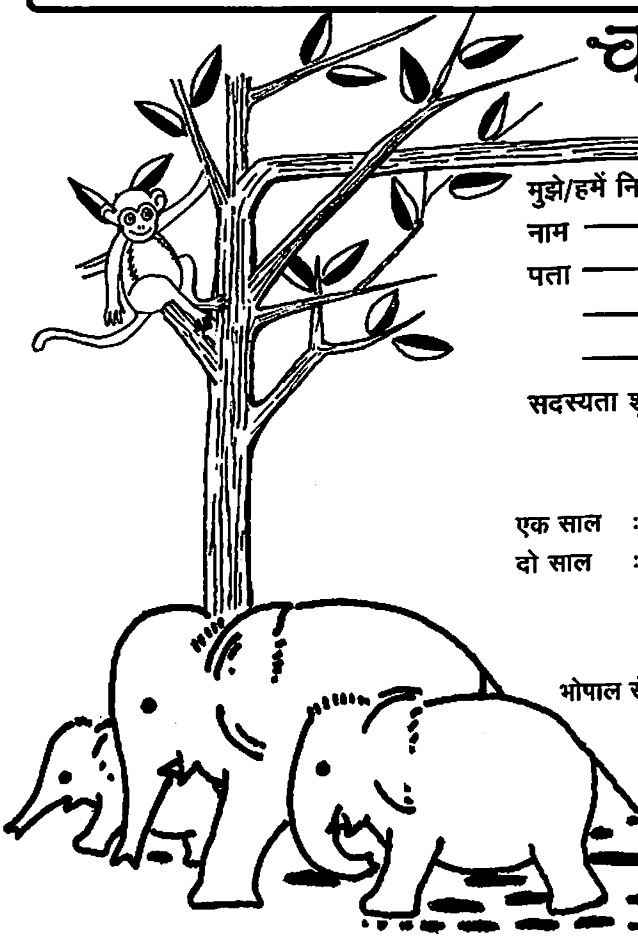
एक प्रति	: 15.00 रुपए	एक साल :	150.00 रुपए
दो साल	: 275.00 रुपए	तीन साल :	350.00 रुपए

आजीवन : 1500.00 रुपए

इससे पहले चकमक के चंदे में वृद्धि सन् 1999 (जुलाई) में की गई थी।

चकमक में विज्ञापन की दरें

पिछला कवर (रंगीन)	15000/- प्रति अंक	भीतरी कवर (रंगीन)	10000/- प्रति अंक
भीतर पृष्ठ (श्याम-श्वेत)	5000/- प्रति अंक	स्पॉन्सरशिप पट्टी	1000/- प्रति पेज



चकमक सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर चकमक भेजना शुरू करें -

नाम ______________________________

पता ______________________________

____

____

सदस्यता शुल्क रु. .... मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

सदस्यता दरें

एक साल	: 150.00 रुपए	तीन साल	: 350.00 रुपए
दो साल	: 275.00 रुपए	आजीवन	: 1500.00 रुपए

सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर/ ड्राफ्ट / या भोपाल में देय चेक से एकलव्य के नाम में नीचे लिखे पते पर भेजें।

भोपाल से बाहर भुगतान किए जाने वाले चेक में रु. 80.00 अतिरिक्त जोड़ें।

एकलव्य - ई-7/453, एचआईजी, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल, म.प्र. - 462 016 फोन : 0755 - 2463380

एक मज़ेदार खेल

आइवर यूशिएल

इशारे पर *तितली* नचाओ



यह सामान जुगाड़ो :

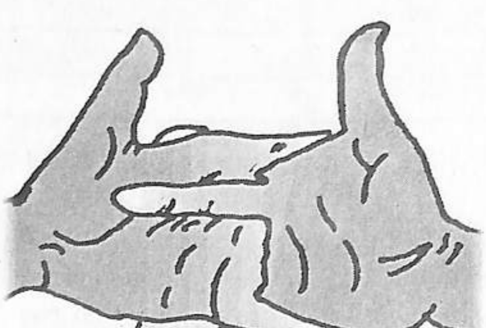
मोटे तार का टुकड़ा, पतंगी कागज़ या टिश्यू पेपर

तैयारी जो पहले करनी है :

पतंगी कागज़ को मोड़माड़ कर पहले तो तितली के पंखों की - सी शक्ल दे डालो और फिर तार को दोहरा करके इसे मुड़े हुए तार के बीच रख दो। अब तार के एक सिरे पर छल्ला बनाते हुए तारे को इस तरह बँटना शुरू करो ताकि आगे इन्हीं बटों के बीच पतंगी कागज़ वाला पंख फँस जाए। तुम्हारा काम पूरा होने पर तार के बीच फँसे पंख की शक्ल ऊपर वाले चित्र जैसी हो जाएगी।

अब शुरू करो :

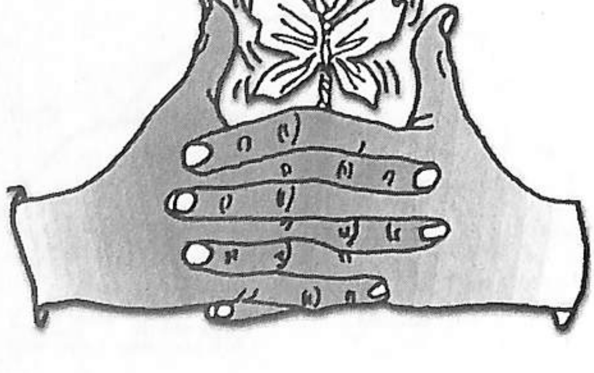
अपना तमाशा शुरू करने सें पहले दर्शकों की नज़र बचाकर तार में बनाए गए छल्ले को दाएँ हाथ की अँगूठे से दूसरी अँगुली में पहन लो और फिर



दोनों हाथों की अँगुलियों को आपस में एक-दूसरे के साथ इस तरह उलझाओ ताकि तितली के तार वाली अँगुली हथेलियों के पीछे स्वतंत्र रहे।

वास्तव में तुम्हारी अँगुलियों की स्थिति क्या होगी यह तुम चित्रों के सहारे आसानी से समझ जाओगे। हाँ, दर्शकों की ओर से बेफिक्र रहना क्योंकि सामने की ओर से तुम्हारे हाथ की अँगुलियों में एक की कमी की ओर उनका ध्यान बिल्कुल भी नहीं जाएगा। उन्हें तो लगेगा कि तितली का धड़ तुम्हारी हथेली के साथ किसी जादुई ताकत से जुड़ा हुआ है।

खेल को और रोचक बनाने के लिए अपने सिर को हल्के-हल्के झटके देते हुए हिलाओ और ठीक इसी समय हिलाओ अपनी स्वतंत्र अँगुली को। जैसे ही तुम अँगुली को हिलाओगे तितली भी नाचती नज़र आएगी। तुम्हारे सिर के झटके और तितली का नाच एक साथ शुरू और बन्द होने पर दर्शक ज़रूर चकित रह जाएँगे। ●





इस तस्वीर में *म* से शुरू होने वाली
पैंतीस से ज़्यादा चीज़ें हैं।
देखें तुम कितनी ढूँढ पाते हो?

बैंक का दिवाला

● रस्किन बौंड

नत्थू एक झाड़ू वाला था और वह अपने काम से बहुत असंतुष्ट था। वह एक छोटे से बैंक में काम करता था जिसके मालिक सेठ गोविन्दराम थे। वे बहुत ही धनी थे, मगर कई बार वह अपनी लापरवाही की वजह से सब कुछ खोने की नौबत तक पहुँच जाते थे।

एक दिन सुबह नत्थू जल्दी-जल्दी अपने छोटे से झाड़ू से सीढ़ियों को झाड़ रहा था। उसी समय सीताराम, जो धोबी का बेटा था, अपने काम से निकला हुआ आया।

"अरे! इतनी धूल क्यों उड़ा रहे हो? अभी भी परेशान हो, क्या वे तुझे पैसे नहीं दे रहे हैं?" सीताराम ने पूछा।

"मुझे तो बात ही नहीं करनी," नत्थू बोला, "मुझे तो इस महीने के भी पैसे नहीं मिलने वाले। कौन कहेगा कि यह बैंक एक गरीब आदमी को भी पैसा नहीं दे सकता। बस! मैं इस जगह को छोड़ने ही वाला हूँ।"

"घबराओ मत," सीताराम ने कहा, "तुम्हारे लिए मैं नई नौकरी ढूँढ़ दूँगा।" अपने चौथे घर में, सीताराम ने एक औरत को बोलते हुए सुना कि आज-कल झाड़ू लगाने को कोई नहीं मिलता।

सीताराम ने कहा, "मैं एक झाड़ू वाले को जानता हूँ जिसे नौकरी चाहिए। वह अभी सेठ गोविन्द राम के बैंक में काम करता है, लेकिन वे उसे पैसा नहीं दे रहे हैं।"

"ऐसा क्यों है?" श्रीमती प्रकाश ने पूछा।

"शायद उनके पास पैसे की कमी होगी," उसने कंधे उचका के कहा। श्रीमती प्रकाश हँसी, और बोलीं, "उससे कहो कि उसे जब भी समय मिले तो मुझसे आकर मिले।"

श्रीमती प्रकाश को बाज़ार जाना था। वे अपने नौकरों को निर्देश देकर निकलीं और रास्ते में एक इमली के पेड़ के पास उन्हें अपनी सहेली श्रीमती भूषण मिली, जो धूप से बचने के लिए पेड़ की छाया में खड़ी थीं। बात करते-करते उन्हें पाँच मिनट गुजर गए। तभी श्रीमती प्रकाश बोली, "अच्छा, तुझे पाता है? सेठ गोविंदराम का बैंक अपने कर्मचारियों को पैसा भी नहीं देता है। आज सुबह



ही मैंने सुना कि उनके झाड़ू वाले को दो महीने से पैसा नहीं मिला।" "क्या?" अगर झाड़ू वाले को पैसा नहीं दे पाएँगें तो दूसरों को क्या देंगे? यह कहकर वे अपने पति को ढूँढ़ने जुगल किशोर की दुकान तक पहुँची।

"तो यहाँ हो," श्रीमती भूषण ने कहा, "कहाँ थे इतनी देर तक?"

"यहीं पर तो था," श्रीमान भूषण ने कहा, "एक से दूसरी जगह नहीं जाती तो मैं तुम्हें यहीं पर मिलता।"

"अब बस भी करो, पता नहीं क्या-क्या हो रहा है? अब तो बैंक भी दिवालिया हो गया है।"

"लेकिन कौन-सा?" जुगलकिशोर ने पूछा।

"सेठ गोविन्दराम का। मैंने सुना है कि वे अपने नौकरों को पैसा भी नहीं दे पा रहे हैं?"

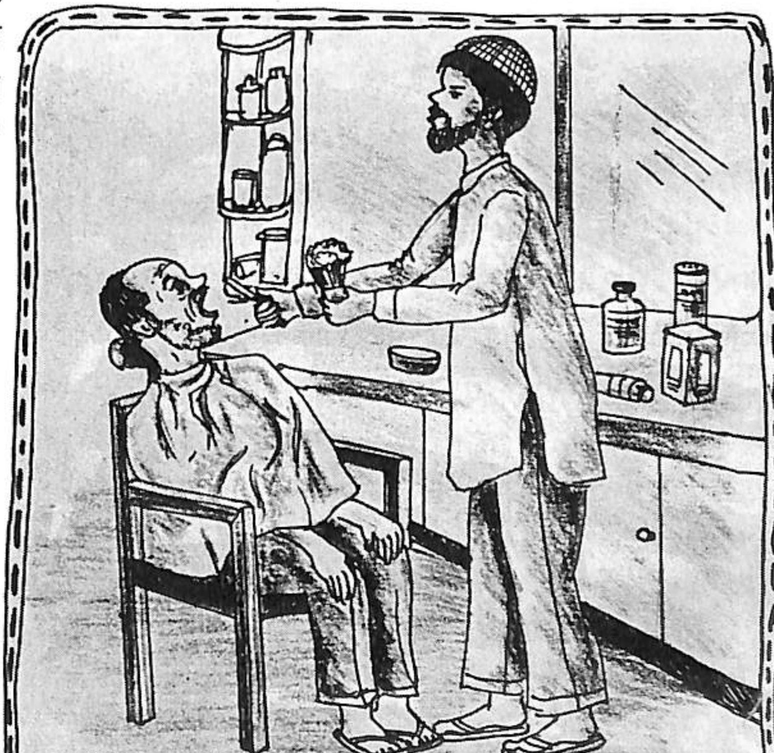
जुगल किशोरजी ने चकित होकर उनकी बात सुनी और अपने पड़ोसी को बुलाकर कहा, "फैज़ हुसैन, तुमने सुना है? सेठ गोविंदराम का बैंक दिवालिया हो गया है। अभी पैसा निकाल लो नहीं तो बाद में नहीं मिलेगा।"

फ़ैज हुसैन एक बूढ़े की दाढ़ी बना रहा था। वह बूढ़ा चिल्लाते हुए अपनी कुर्सी छोड़कर कूदकर भागा। उसने सेठ गोविंदराम को फोन किया, लेकिन सेठ तो छुट्टी मनाने गया हुआ था। उसे विश्वास नहीं हो रहा था। वापिस आकर वह बोला, "चिड़िया उड़ गई है। सेठ गोविंदराम ने शहर छोड़ दिया है। मुझे पूरा विश्वास है कि बैंक दिवालिया हो गया है।" और भागते-भागते अपने ऑफिस गया।

यह समाचार पूरे शहर में आग के जैसे फैल गया, चाय की दुकान से लेकर पानवाले तक, सब्जी मण्डी से लेकर सुनार तक। गनपत एक लँगड़ा भिखारी था जो कई साल से सड़क किनारे भीख माँग रहा था। उसने सबको चकित कर दिया जब वह भी कूदकर भागते-भागते बैक पहुँचा। उसके भी एक हज़ार रुपए बैंक में थे। सब लोग केवल बैंक के बारे में ही बात कर रहे थे। इस शहर में कभी कुछ नहीं होता था, शायद इसीलिए इस खबर ने सबको चक्कर में डाल दिया। सब अपने-अपने बारे में कह रहे थे - या तो उन्होंने पैसा बैंक से निकाल लिया था, या फिर कभी इस बैंक में पैसा डाला ही नहीं। कुछ कह रहे थे कि गोविंदराम ने शहर छोड़ दिया है और कुछ कहते थे कि देश छोड़ दिया है।

एक बोला कि उसके पास पासपोर्ट था। किसी ने कहा कि वह वहीं शहर में छुपा हुआ है या उसने फाँसी लगाकर आत्महत्या कर ली है।

एक व्यक्ति जिसका भाई बैंक में क्लर्क था,



सभी चित्र - सुनील

उसने सोचा कि वह उससे फोन कर सही बात पता लगाए।

"मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता सिवाए इसके कि आधा शहर यहाँ पर पहुँच गया है और सब अपना पैसा निकालने की कोशिश कर रहे हैं। ये लोग पागल हो गए हैं," उसके भाई ने कहा।

"खबर है कि तुम सबको पैसा नहीं मिला है?"

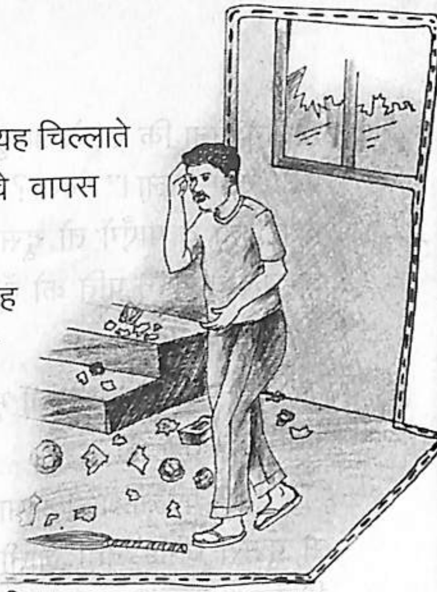
"सारे क्लर्कों को पैसा दे दिया गया है। शायद छोटे-मोटे काम करने वालों को देर से पैसा मिलेगा, क्योंकि जो क्लर्क उन्हें पैसा देता है, वह बीमार है।"

दोपहर तक बैंक ने अपने सारे रखे हुए पैसे बाँट दिए थे और परेशान मैनेजर कुछ नहीं कर पा रहा था। सब क्लर्कों ने अपनी खिड़कियाँ बन्द कर लीं। लेकिन अब भी लोग बाहर चिल्ला रहे थे- "हमें पैसा दो! अभी दो! अभी दो!"

कुछ शरारती लोग भीड़ में घुसकर चिल्लाने में शामिल हो गए। मैनेजर दरवाज़े के सामने खड़ा होकर सबको शांत करने की कोशिश कर रहा था। वह कह रहा था कि बैंक के अंदर बहुत पैसा है और वे सुबह लेने आ सकते हैं।

"नहीं हमें अभी चाहिए! अभी! अभी!" लोग चिल्लाए। कुछ लोगों ने पत्थर फेंके और मैनेजर व क्लर्क डर के मारे अंदर भाग गए।

एक ईंट हवा में उड़ती हुई आई और काँच की खिड़की चकनाचूर हो गई। कुछ ही समय में पुलिस आ गई और अपने लम्बे-लम्बे डंडों से लोगों को हटाने लगी। कुछ लोग यह चिल्लाते हुए जाने लगे कि वे वापस आएँगे।



जब नत्थू सुबह आया तो उसने देखा कि चारों तरफ पत्थर और काँच के टुकड़े बिखरे पड़े थे।

"गुण्डे! किस गुण्डे ने यह किया! पहले ही पैसा कम है और अब काम भी ज़्यादा! छी!" और उसने गुस्से से अपना झाड़ू नीचे फेंक दिया।

"नमस्ते नत्थू! सीताराम ने अपनी साइकिल से उतरते हुए कहा, "तो एक नई नौकरी के लिए तैयार हो? जाना तो पड़ेगा ही, बैंक तो बंद होने वाला है।"

"क्या बोला तुमने?"

"सुना नहीं? बैंक तो दिवालिया होने वाला है। तुम यहीं पर रुको। जब दूसरे लोग आएँगे तब तुम भी अपना पैसा माँग लेना।" यह कहकर वह अपनी साइकिल पर चला गया। नत्थू फिर से सीढ़ियों को झाड़ने लगा। जब उसने काम खत्म कर लिया तो वह जा के सीढ़ियों पर बैठकर मैनेजर का इन्तज़ार करने लगा।

कौन सोच सकता था कि यह भी हो सकता है? उसने अपने आप से कहा, 'पता नहीं यह सब कैसे हुआ?' ●

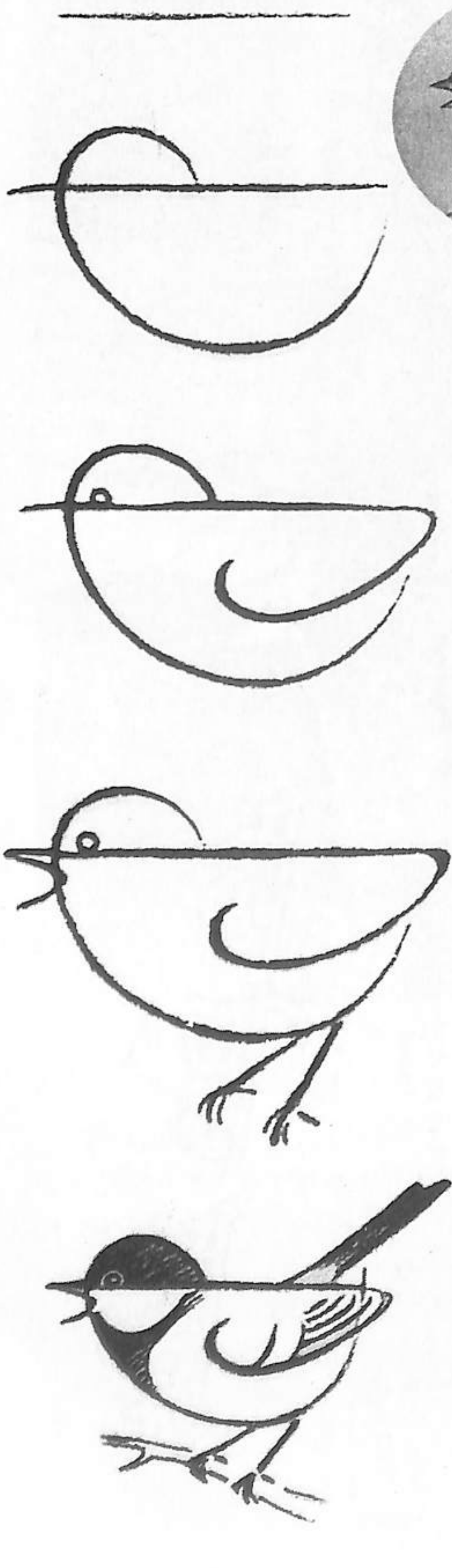
जैसा कि हमने इस बार की बात में ज़िक्र किया है- **खिड़की** और **बैंक का दिवाला** ये दोनों मज़ेदार कहानियाँ बंगलौर, ऋषिवैली के बच्चों ने अपनी टीचर सहजो जी के निर्देशन में अनूदित की हैं। यहाँ उन सभी बच्चों के नाम दे रहे हैं - अमृता आनन्द, स्वाध्विता वेंकटरमन, गौतम रमोला, ज़स्कार, अर्चना जास्ती, अजित राज, रेखा नल्लूरी, विश्वम्भरा, आयुष्या, अपराजित बासु, आनन्द, मधुसूदन, श्रेया भारद्वाज, गायत्री गुलवाड़ी, अदिति मनोहर, अन्नपूर्णा, साईस्वरूप, पृथ्वी राना देव, अभिनन्द, ऋतुराज, नवीन, नित्या सल्दाना, करिश्मा तिवारी, सिद्धार्थ भाटिया, शिवम अरोड़ा, राजेन्द्र नाथ, मीत कुमार, अनिरुद्ध, श्रुति निवेदिता, श्रेया सिन्हा, साहित्या अय्यर, अदिति मोदी, ईरा, श्रीरत्ना, अन्जनेय, प्रणव, शंकर, सी.एस.आर., योगानन्द, सुनहरा, स्वाति, राजशेखर, सिद्धार्थ.डी, सिद्धार्थ.जी, आदित्या।



बचपन न मिलाओ धूल में
नाम लिखाओ
स्कूल में
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
जिस उम्र में बच्चे के हाथों में स्लेट होनी चाहिए, उस उम्र में वह धोने के वास्ते होटल की प्लेट लिए है। यह एक तरह की हिंसा है। एक भविष्य और एक बचपन यहां मारा जा रहा है। हम-आप इसके मूक दर्शक बने नहीं रह सकते। प्रतिकार में उठिए और स्कूल चलें हम अभियान की अलख जगाइए।
शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री
स्कूल चलें हम
वि. क्र. D-65106 दि. 10-07-2006

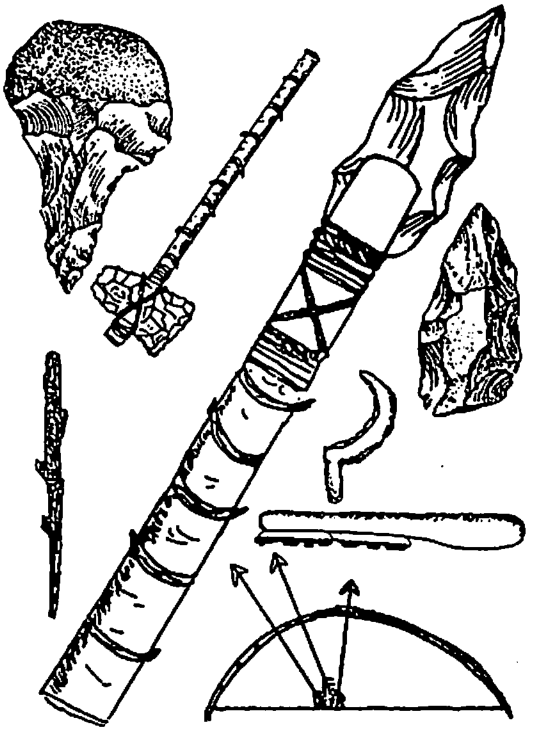


तुम भी बनाओ









पिछले अंक में 'घुमक्कड़ लोग' की पहली कड़ी तुमने पढ़ी। इसमें तुम्हें हज़ारों साल पहले लोगों के जीवन की एक झलक मिली होगी। इस बार हम जानने की कोशिश करेंगे कि घुमक्कड़ मानव शिकार कैसे करता था। उसके औज़ार किस तरह के हुआ करते थे। उनकी सांस्कृतिक गतिविधियाँ शिकार से किस तरह जुड़ी थीं।

और हाँ, करमी की कहानी का बचा हिस्सा भी।

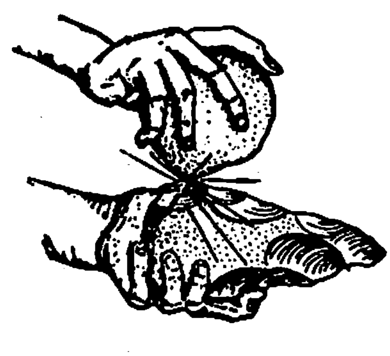
घुमक्कड़ लोग

शिकार के लिए किसी ऐसी चीज़ की ज़रूरत पड़ती होगी जो मज़बूत हो, कड़ी हो और जो नुकीली हो या जिसे आसानी से नुकीला बनाया जा सके। उन दिनों लोहा, ताँबे जैसी धातुओं से लोग परिचित नहीं थे। तो वे औज़ार किस चीज़ से बनाते थे? पत्थर, लकड़ी, जानवरों के सींग और हड्डियों जैसी चीज़ें उन दिनों हथियार बनाने के काम आया करती थीं। इन्हीं को नुकीला बनाकर औज़ार बनाए जाते थे। धीरे-धीरे मनुष्य ने पत्थर के बहुत बारीक टुकड़े बनाना भी सीख लिया। ये पत्थर के छोटे और बारीक टुकड़े किसी लकड़ी के हत्थे में लगकर कुल्हाड़ी जैसे किसी तेज़ औज़ार का काम देते थे।

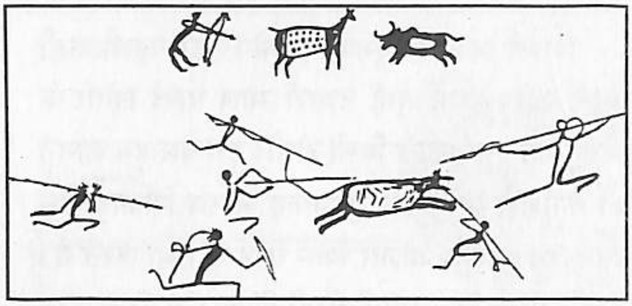
उस समय औज़ार बनाने के लिए अलग से कोई कारीगर नहीं था। झुण्ड के सब लोग औज़ार बनाया करते थे। हाँ यह ज़रूर हो सकता है कि कुछ लोग औरों से ज़्यादा अच्छे औज़ार बनाते हों।

पत्थर और लकड़ी के औज़ारों का उपयोग करते हुए उस समय के लोग तरह-तरह की चीज़ें बना लेते थे। महिलाएँ और पुरुष मिलकर इन औज़ारों से लकड़ी या बाँस काटते, चीरते और उससे दूसरे औज़ार, टोकरियाँ, मछली के जाल आदि बना लेते। यही औज़ार कभी पेड़ों की छालें छीलने के काम आते होंगे और इनसे ही जानवरों की खालें साफ करके पहनने लायक बनाई जाती होंगी। वे लकड़ी, सीप, हड्डी, हाथी-दाँत आदि की मालाएँ भी बनाते।

चित्र और नाच



शिकारी लोग गुफा के अंदर दीवारों पर रंगीन चित्र भी बनाया करते थे। वे रंगीन पत्थरों को घिसकर रंग तैयार करते थे। बाँस के ब्रुश से चट्टानों पर चित्र बनाते थे। ये चित्र आज भी कई गुफाओं की दीवारों या चट्टानों पर देखे जा सकते हैं।



चित्र बनाने के अलावा शिकारी मानव के जीवन में एक और चीज़ बहुत महत्व रखती थी। वह था 'नाच'। वे सब मिलकर देर तक नाचते थे।



करमी की कहानी.....................................

करमी और उसके झुण्ड के बाकी लोग नए जंगल में पहुँच गए थे। वहाँ भी कुछ दिनों तो खूब शिकार मिला। मगर फिर कुछ दिनों बाद झुण्ड के लोग जंगल से खाली हाथ लौटने लगे। ऐसे में झुण्ड का गुज़ारा कन्द-मूल और फलों से चल रहा था। पर धीरे-धीरे वे भी खप गए।

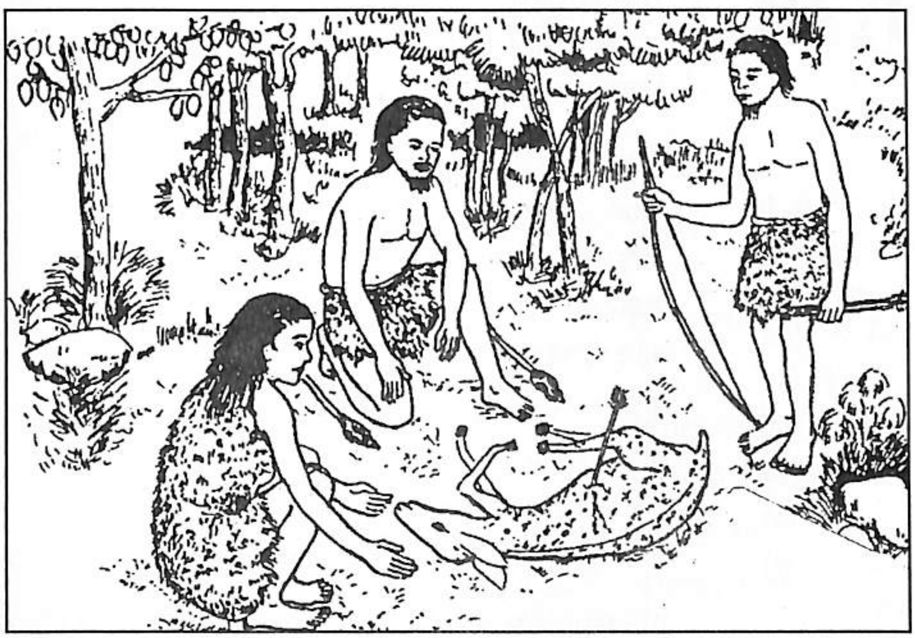
करमी की माँ ने एक दिन झुण्ड के सारे लोगों को बुलाकर कहा, "यह हमारे लिए बहुत कठिन समय है। हमें कुछ करना होगा।" एक महिला बोली, "हाँ अब फल और कन्द भी खत्म होने को आए हैं।" एक आदमी बोला, "यहाँ जंगल में जानवर तो बहुत हैं। मगर न जाने क्यों वे न तो हमारे जाल में फँसते हैं और न ही हमारे तीरों का निशाना बनते हैं।" करमी की माँ बोली, "हम लोगों को नाच की रस्म करनी चाहिए। शायद जानवरों के देवता नाराज़ हैं।"

तो एक दिन नाच की रस्म शुरू हुई। सबने नाच में भाग लिया। कुछ लोगों के सिर पर हिरण की खाल थी या उसका सींगदार मुखौटा था। बाकी लोगों के पास धनुष-बाण या भाला था। हिरण का मुखौटा पहनने वाला आदमी हिरण बनकर नाचने लगता। बाकी लोग उसे घेर कर नाचते। वे उसे हिरण मान कर उस पर झूठमूठ का भोंथरा बाण छोड़ते। फिर हिरण बना आदमी झूठमूठ घायल होने का अभिनय करने लगता। दूसरे लोग उसे घेरे के बाहर घसीट कर ले जाते और उस पर अपने चाकू चलाने का नाटक करते। फिर सब घेरे में लौटते। इस बार कोई दूसरा आदमी हिरण का स्वांग करता।



इस तरह यह नाच बहुत देर तक चलता। उन लोगों के मन में कहीं यह विश्वास था कि नाच की यह पूरी रस्म करने से वे हिरणों पर टोना कर सकते हैं। वे मानते थे कि नाच के द्वारा शिकारियों को जादू की शक्ति मिलेगी और वे जानवरों को घने जंगलों से बाहर निकालकर उनका शिकार कर पाएँगे।

इस झुण्ड का एक सयाना आदमी था - ओझा जैसा एक आदमी। उसकी देखा-देखी ही सब लोग नाच करते थे। उसने गुफा की दीवार पर कुछ चित्र बनाए। जानवरों के चित्र, जानवर का मुखौटा व खाल ओढ़े लोगों के चित्र और नाच करते लोगों के चित्र। फिर उसने जानवर का शिकार करते हुए आदमी का चित्र भी बनाया। सब मिलकर जानवर के उस चित्र पर तीर मारते। वे मानते थे कि अब जब वे वास्तव में शिकार करेंगे तब उनके तीर इसी तरह निशाने पर लगेंगे। नाच व चित्रों की रस्म पूरी होते ही वे शिकार पर निकल पड़ते।



शिकार और माफी

एक दिन माको और उसकी टोली के लोग जब गुफा में लौटे तो दो बड़े हिरणों को खींचते हुए ला रहे थे।

कोरा अपनी टोली के साथ खाली हाथ लौटा था। उसके साथी बहुत परेशान थे क्योंकि उन्हें शिकार नहीं मिला था। पर गुफा के बाहर दो हिरणों को देखकर उनका भी चेहरा खिल उठा और वे बहुत खुश हुए।

फिर क्या था! लोगों ने हिरणों को एक जगह रख दिया। सब शिकारी बारी-बारी से हिरणों के पास गए। अपने दाहिने हाथ से सिर से दुम तक हिरणों को सहलाया।

झुण्ड में से एक ने मरे हिरणों से कहा, "आराम करो। तुमने हमें अपना माँस दिया, इसके लिए धन्यवाद।"

दूसरे ने कहा, "तुमने हमें अपने सींग दिए हैं, हम तुम्हें इसके लिए धन्यवाद देते हैं।"

करमी की माँ बोली, "हमारे कारण तुम्हें चोट लगी और तकलीफ हुई। हमें माफ करना।"

फिर झुण्ड के सब लोगों ने हिरण का माँस भून कर खाया। पत्थरों को टकराकर आग बनाना तो वे जानते ही थे।

तुम्हें लगेगा कैसी अजीब बात है! शिकारी लोग अपने द्वारा मारे गए जानवरों को धन्यवाद दे रहे हैं। वे मानते थे कि जानवर भी हमारे जैसे ही हैं। इसलिए उनको मारना अपने जैसे ही किसी को मारना है।

लेकिन जिन परिस्थितियों में वे रहते थे उसमें जीवित रहने व ज़रूरत पड़ने पर भोजन के लिए जानवरों को मारना पड़ता था। इसलिए वे उन्हें धन्यवाद देना और माफी माँगना नहीं भूलते थे। ●

.......एकलव्य द्वारा विकसित सामाजिक अध्ययन कक्षा- 6 से.......



सा रे गा मा

● राजेश उत्साही

पिछले दिनों किसी काम से लखनऊ जाना हुआ। एक मित्र के घर उनके तीन साल के बेटे अरिन्दम से दोस्ती हो गई। अरिन्दम ने बिल्कुल नए अंदाज़ में अभिनय के साथ अपनी तोतली आवाज़ में मुझे यह गीत सुनाया। मैं चकित था, अरिन्दम को पूरा गीत याद था। इसमें शायद कुछ अरिन्दम का कमाल था और कुछ गीत का। जब मैंने उससे पूछा, तुम्हें यह क्यों अच्छा लगता है? उसने कहा, इसमें रेलगाड़ी है।

तुम्हें भी यह गीत अच्छा लगता होगा। इसमें रेलगाड़ी के अलावा और भी बहुत कुछ है।

फिल्म : बंटी और बबली
गायक : उदित नारायण, सुनिधि चौहान, निहिरा जोशी
संगीतकार : शंकर, अहसान, लॉय
गीतकार : गुलजार

धिन धिनक धिन धिनता
छोटे-छोटे शहरों से
खाली बोर दोपहरों से
हम तो झोला उठाके चलें
बारिश कम-कम लगती हैं
नदियाँ मद्धम लगती हैं
हम समुंदर के अंदर चलें-2
ओ हो हो हम चलें, हम चलें, ओए रामचंद्र रे
हम चलें हम चलें ओए रामचंद्र रे
धड़क - धड़क, धड़क - धड़क धुआँ उड़ाए रे
धड़क - धड़क, धड़क - धड़क सीटी बजाए रे
धड़क - धड़क, धड़क - धड़क धुआँ उड़ाए रे
धड़क - धड़क, धड़क - धड़क मुझे बुलाए रे

धिन धिनक धिन धिनता
ओहो जरा रस्ता तो दो
थोड़ा-सा बादल चखना है
बड़ा-बड़ा कोयले से नाम फलक पे लिखना है
चाँद से होकर सड़क जाती है
उसी पे आगे जाके अपना मकां होगा - 2
ओ हो हो हम चलें, हम चलें, ओए रामचंद्र रे
हम चलें हम चलें, ओए रामचंद्र रे
धड़क - धड़क, धड़क - धड़क धुआँ उड़ाए रे - 2

धिन धिनक धिन धिनता
हम तो चलें सर पे लिए अम्बर की ठण्डी फुलकारियाँ
हम ही जमीं हम आसमां खसमानु खाए बाकी जहाँ
चाँद का टीका मत्थे लगा के
रात-दिन तारों में जीना-बीना इजी नहीं - 2
ओ हो हम चलें हम चलें ओए रामचंद्र रे
हम चलें हम चलें ओए रामचंद्र रे
धड़क - धड़क, धड़क - धड़क धुआँ उड़ाए रे - 2

एक मज़ेदार खेल



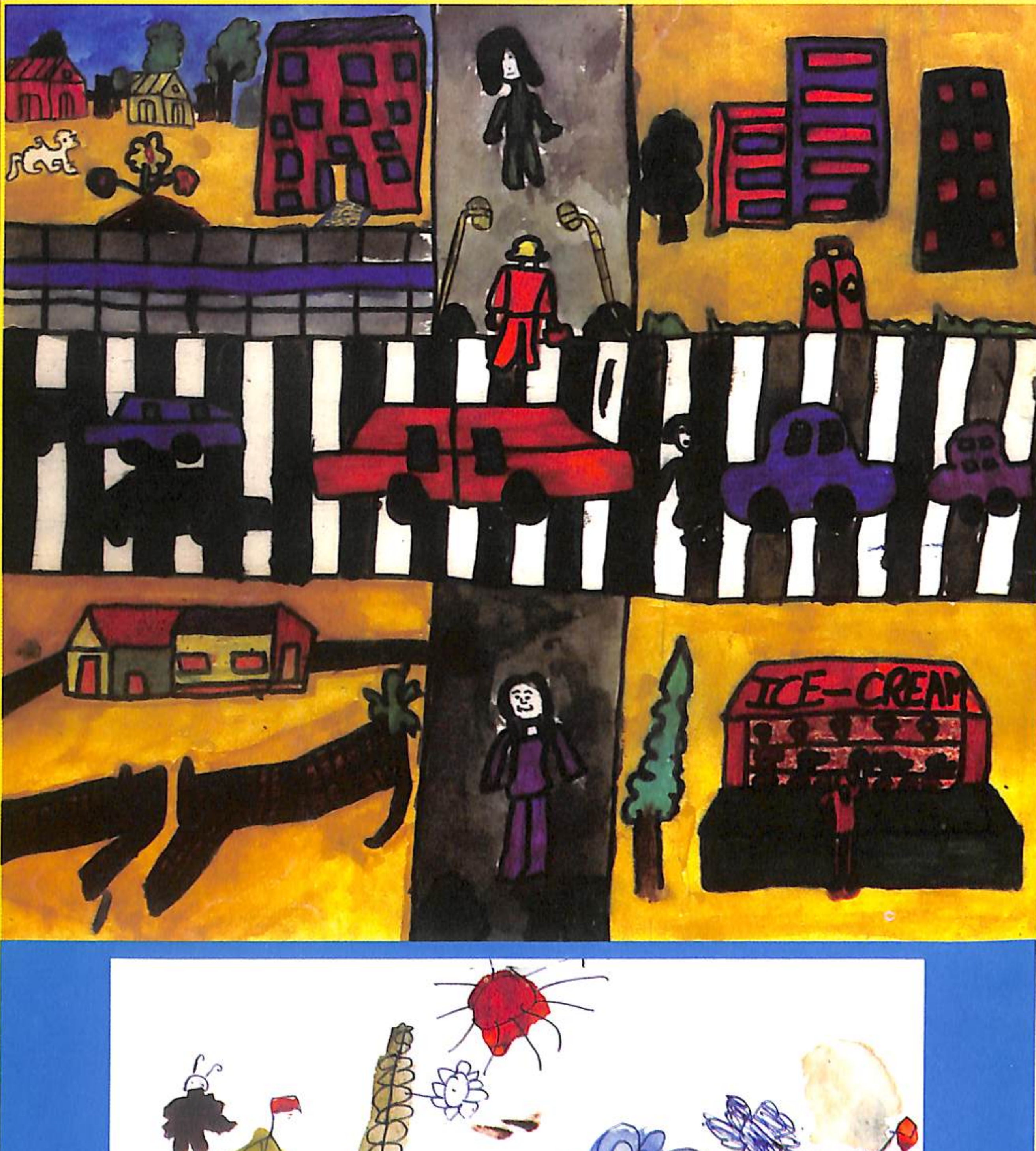


इस खेल के लिए एक जैसी सात गोटियाँ जुटा लो। टाइगर के लिए भी एक अलग गोटी ढूँढ लो। इसे दो खिलाड़ी खेल सकते हैं। यह खेल सोलह गोटी की तरह ही है।

एक खिलाड़ी सात गोटियाँ लेगा और दूसरा टाइगर गोटी। अब यहाँ बने सितारे में सातों गोटियाँ जमा लो। दोनों खिलाड़ी बारी-बारी से अपनी गोटी या टाइगर को सितारे के कोनों पर आगे बढ़ाएँगे। एक बार में एक ही कोने पर जा सकते हैं। टाइगर किसी गोटी को लाँघकर आगे जा सकता है, लेकिन आगे का कोना खाली होना चाहिए। टाइगर जिस गोटी को लाघेंगा, वह खेल से बाहर हो जाएगी। अब गोटियों का काम है टाइगर को आगे बढ़ने से रोकना और टाइगर का काम है गोटी खाना। या तो टाइगर घिर जाएगा या फिर वह सब गोटियों को खा लेगा।

जो जीता वही असली टाइगर।

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रं. म.प्र./261/भोपाल/2006-08



सृष्टि, चौथी, टोंक, राजस्थान



शारदा, 5 वर्ष, होशंगाबाद, म.प्र.

रैक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना